

Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0°C
न्यूनतम तापमान: 21.0°C
हवा गति: 11 कि. / घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

संजीवनी टुडे

संजीवनी टुडे के साथ

अब होगी सुविधाओं की बात
संजीवनी टुडे के साथ
जम्हाइरत, वैवाहिक वर्धनांग एवं
निशुलक बर्बाद संदेश
मात्र 1100/-/-
साइज 8X9 cm
संजीवनी टुडे
विशेष संदेशों के साथ, संपर्क: 099-87-17888-87
www.sanjeevnitoday.com * Toll-free Number * 24x7x7
e-mail: sanjeevnitoday@gmail.com

पीएम बोले-कोर्ट के सामने चक्कर शब्द मंडेटीरी हो गया था

हरियाणा में बदल सकती है चुनाव की तारीख

इसमें फंस गए तो कब निकलेंगे पता नहीं, दशकों बाद सरकार ने प्रभावी कदम उठाए

1 अक्टूबर की जगह 6 दिन बाद वोटिंग संभव, मंगलवार को ऐलान करेगा आयोग

संजीवनी टुडे

जोधपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोधपुर में कहा- दशकों से कोर्ट के सामने चक्कर शब्द मंडेटीरी (अनिवार्य) हो गया था। कोई बुरा मत मानना। कोर्ट का चक्कर, मुकदमे का चक्कर यानी एक ऐसा चक्कर हो गया था कि इसमें फंस गए तो कब निकलेंगे पता नहीं। मोदी ने रविवार को राजस्थान हाईकोर्ट की स्थापना के प्लेटिनम जुबली समारोह में ये बात कही। मोदी ने हाईकोर्ट म्यूजियम का भी उद्घाटन किया। मोदी ने कहा- आज दशकों बाद आम लोगों की पीड़ा और उस चक्कर को खत्म करने के लिए सरकार ने प्रभावी कदम उठाए हैं। मेरा मानना है कि न्याय हमेशा सरल और स्पष्ट होता है, लेकिन कई बार प्रक्रियाएं उसे मुश्किल बना देती हैं। हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम न्याय को सरल और स्पष्ट बनाएं। राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मनिंद्र मोहन श्रीवास्तव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का साफा पहना कर स्वागत किया। पीएम ने कहा- आज देश के सपने भी बड़े हैं। देशवासियों की आकांक्षाएं भी बड़ी हैं, इसलिए जरूरी है कि हम नए भारत के हिसाब से नए इनोवेशन करें और अपनी व्यवस्थाओं को आधुनिक बनाएं। ये 'जस्टिस फॉर ऑल' के लिए भी उतना ही जरूरी है। आज देश में 18 हजार से ज्यादा अदालतें कम्प्यूटराइज्ड हो चुकी हैं।



राजस्थान हाईकोर्ट के अस्तित्व से हमारे राष्ट्र की एकता का इतिहास जुड़ा

पीएम ने कहा- राजस्थान हाईकोर्ट के अस्तित्व से हमारे राष्ट्र की एकता का इतिहास जुड़ा है। आप सब जानते हैं कि सरदार पटेल ने जब 500 से ज्यादा रियासतों को जोड़कर देश को एक सूत्र में पिरोया था, तो उसमें राजस्थान की भी कई रियासतें थीं। जयपुर, उदयपुर और कोटा जैसी कई रियासतों के अपने हाईकोर्ट भी थे। इनके इंटीग्रेशन (एकीकरण) से राजस्थान हाईकोर्ट अस्तित्व में आया यानी राष्ट्रीय एकता ये हमारे ज्यूडिशियल सिस्टम का भी फार्जिंग स्टोन है। ये फार्जिंग स्टोन जितना मजबूत होगा, हमारा देश और व्यवस्थाएं भी उतनी ही मजबूत होंगी। मुझे बताया गया है कि नेशनल ज्यूडिशियल डाटा ग्रिड से 26 करोड़ से ज्यादा मुकदमों की जानकारी एक सेंट्रलाइज्ड ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जुड़ चुकी है। मोदी ने कहा- आज पूरे देश की 3 हजार से ज्यादा कोर्ट परिसर और 1200 से ज्यादा जेल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़ गई हैं। मुझे खुशी है कि राजस्थान भी इस दिशा में काफी तेज गति से काम कर रहा है।

न्याय हमेशा सरल होता है, कई बार प्रक्रियाएं उसे मुश्किल बना देती हैं

मोदी ने कहा- मेरा मानना है कि न्याय हमेशा सरल और स्पष्ट होता है, लेकिन कई बार प्रक्रियाएं उसे मुश्किल बना देती हैं। ये हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम न्याय को ज्वादा से ज्वादा सरल और स्पष्ट बनाएं। मुझे संतोष है कि देश ने इस दिशा में कई ऐतिहासिक और निर्णायक कदम उठाए हैं। हमने पूरी तरह से अप्रासंगिक हो चुके सैकड़ों औपनिवेशिक कानूनों को रद्द किया है। आजादी के इतने दशक बाद गुलामी की मानसिकता से उबरते हुए देश ने भारतीय दंड संहिता की जगह 'भारतीय न्याय संहिता' को अपनाया है। दंड की जगह न्याय ये भारतीय चिंतन का आधार है। संहिता इस मानवीय चिंतन को आगे बढ़ाती है। हमारी न्यायपालिका ने निरंतर राष्ट्रीय विषयों पर सजगता और सक्रियता की नैतिक जिम्मेदारी निभाई है। कश्मीर से आर्टिकल-370 हटाने का, देश के संवैधानिक एकीकरण का उदाहरण हमारे सामने है। एडि जैसे मानवीय कानून का उदाहरण भी हमारे सामने है। प्रधानमंत्री ने कहा- अभी 15 अगस्त को मैंने लाल किले से सेक्यूलर सिविल कोड (धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता) की बात की है। इस मुद्दे पर भले ही कोई सरकार पहली बार इतनी मुखर हुई हो, लेकिन हमारी ज्यूडिशियरी दशकों से इसकी वकालत करती आई है। राष्ट्रीय एकता के मुद्दे पर न्यायपालिका का ये स्पष्ट न्यायपालिका पर देशवासियों में भरोसा और बढ़ाएगा।

संजीवनी टुडे

चंडीगढ़। हरियाणा में 1 अक्टूबर के लिए प्रस्तावित विधानसभा चुनाव की वोटिंग की तारीख बदल सकती है। भाजपा और इंडियन नेशनल लोकदल ने चुनाव आयोग को चिट्ठी भेजकर छुट्टियां और बिश्नोई समाज के धार्मिक कार्यक्रम का हवाला देकर तारीख बदलने की मांग की थी, जिस पर चुनाव आयोग विचार कर रहा है। संभावना है कि चुनाव आयोग हरियाणा में 1 अक्टूबर के बजाय 7 या 8 अक्टूबर को वोटिंग कराए। ऐसा होने पर जम्मू-कश्मीर की मतगणना की तारीख भी बदल सकती है। इस पर जो भी फैसला होगा, चुनाव आयोग उसका मंगलवार को ऐलान करेगा। विधानसभा चुनाव की तारीख बदलने को लेकर भाजपा के अलावा, आईएनएलडी और बिश्नोई समाज ने लेंटर लिखे। इसके बाद चुनाव आयोग ने पत्रों का संज्ञान लिया है। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व स्तर के एक नेता ने बताया है कि सोमवार को इस मामले में चुनाव आयोग में मंथन किया जाएगा। इसके बाद मंगलवार को इस पर स्थिति स्पष्ट होगी। भारतीय जनता पार्टी और इंडियन नेशनल लोकदल ने चुनाव आयोग को लिखे लेंटर में कहा था- छुट्टियों के दौरान चुनाव हुए तो वोटिंग प्रतिशत पर असर पड़ेगा। इसके बाद



कांग्रेस सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर पर लिखा, 'भाजपा की आंखों के तारे (इनेलो) और सितारे। दीपेंद्र पर पलटवार करते हुए दुष्यंत चौटाला ने कहा, 'हकीकत में तो आप ही हो एक-दूसरे के प्यारे, तभी तो राज्यसभा चुनाव में उम्मीदवार नहीं उतारे। वहीं, कुमारी सैलजा ने कहा, 'छुट्टी होना तय है, इसलिए छुट्टी का बहाना बना रहे हैं।' भाजपा के प्रवेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौला ने चुनाव आयोग को लेंटर लिखकर कहा कि 28 और 29 सितंबर को शनिवार-रविवार है। 1 अक्टूबर को वोटिंग होगी, जबकि 2 अक्टूबर को गांधी जयंती और 3 अक्टूबर को अग्रसेन जयंती की छुट्टी है। इतनी लंबी छुट्टियों में वोट बाहर घूमने निकल जाएंगे। इससे वोटिंग कम हो सकती है।

हरियाणा भाजपा नेता बॉक्सर विजेंद्र ने चौकाया

कांग्रेस से चुनाव लड़ने पर विनेश फोगाट का समर्थन, बोले-मेरी शुभकामनाएं, पूरा साथ देंगे

संजीवनी टुडे

पानीपत। हरियाणा की धाकड़ पहलवान विनेश फोगाट की विधानसभा चुनाव लड़ने की अटकलें जोंरों पर हैं। चर्चा है कि विनेश फोगाट कांग्रेस में शामिल हो सकती हैं। इन सब चर्चाओं के बीच भाजपा नेता एवं पूर्व बॉक्सर विजेंद्र सिंह ने विनेश फोगाट का समर्थन किया है। विजेंद्र सिंह ने एक चैनल से बातचीत में कहा, 'विनेश फोगाट, हमारी भिवांनी की लड़की है। अगर वह चुनाव लड़ती है तो हमारी बहुत शुभकामनाएं उनके साथ है। हम पहले भी विनेश के साथ थे। हम उनके परिवार को बहुत अच्छे से जानते हैं। इसलिए हम विनेश के साथ पहले भी थे, अभी भी हैं और आगे भी रहेंगे। हम चाहते हैं कि दिल्ली को स्पॉट्स हब बनाया जाए। दिल्ली के लोगों को भी खेलों के प्रति ज्वादा से ज्वादा प्रेरित किया जाए। राजनीति तो हर कोई करता है, लेकिन हम स्पॉट्स की बात करेंगे। हम खेल को आगे ले कर जाएंगे।' वहीं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने विनेश फोगाट के कांग्रेस जाईन करने के सवाल पर कहा कि यह एक काल्पनिक सवाल है। खिलाड़ी किसी एक पार्टी के नहीं होते, वह पूरे देश के होते हैं। अगर कोई उनकी पार्टी में शामिल होगा तो पता चल जाएगा। जो कोई भी पार्टी में शामिल होता है, हम उसका स्वागत करते हैं। आना न आना उनकी इच्छा



पर निर्भर करता है। वह हमारे देश की खिलाड़ी हैं, उनके साथ न्याय नहीं हुआ, उन्हें पूरा मान-सम्मान मिलना चाहिए। विनेश फोगाट को राज्यसभा के लिए मनोनीत किया जाना चाहिए। मैंने पहले भी कहा था कि विनेश को वही सम्मान दिया जाए, जो स्वर्ण पदक विजेता को दिया जाता है। उन्हें वह सम्मान नहीं दिया गया। तभी से चर्चा चल रही है कि विनेश चरखी दादरी से अपनी चंचेरी बहन बबीता फोगाट के खिलाफ चुनावी मैदान में उतर सकती हैं। भिवांनी में रहने वाले ओलिंपियन बॉक्सर विजेंद्र सिंह विजेंद्र 2019 में कांग्रेस में शामिल हुए थे। 2019 लोकसभा चुनाव में पार्टी ने उन्हें साइथ दिल्ली से उम्मीदवार बनाया, लेकिन वे हार गए। इसके बाद 2024 लोकसभा चुनाव से पहले 3 अप्रैल को वह कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए।

विनेश के चुनाव लड़ने की चर्चाएं क्यों

पेरिस ओलिंपिक में डिस्कवालिफाई होने के बाद विनेश फोगाट भारत लौटी तो एयरपोर्ट पर उन्हें रिसीव करने के लिए कांग्रेस सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा गए थे। वह विनेश के रोड शो के दौरान भी साथ रहे। इसके बाद 23 अगस्त को विनेश ने दिल्ली में भूपेंद्र सिंह हुड्डा के परिवार से मुलाकात की। इस दौरान विनेश के पति सोमवीर राठी भी मौजूद थे। इसके बाद कांटेबल बाबूलाल बैरवा आत्महत्या मामले पर लोगों का फूटा गुस्सा डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा सहित सातों विधायकों को पहनाई जूतों की माला

राहुल बोले- मिस इंडिया में कोई दलित-आदिवासी नहीं

रिजिजू ने कहा- बाल बुद्धि ब्यूटी पेजेंट्स में भी आरक्षण चाहते हैं, जबकि सरकार उन्हें नहीं चुनती

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। राहुल गांधी के मिस इंडिया पर दिए बयान पर विवाद शुरू हो गया है। राहुल ने 24 अगस्त को प्रयागराज में 'संविधान का सम्मान और उसकी रक्षा' कार्यक्रम में कहा था- मैंने मिस इंडिया की लिस्ट चेक की। इसमें कोई दलित, आदिवासी या ग़र महिला नहीं थी। प्रधानमंत्री कहते हैं कि देश सुपर पावर बन गया। कैसे सुपर पावर बन जाएगा जब 90% लोग सिस्टम से बाहर बैठे हैं। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने रविवार राहुल के बयान पर कहा- 'राहुल मिस इंडिया में भी आरक्षण चाहते हैं। बाल बुद्धि मनोरंजन के लिए अच्छी हो सकती है, लेकिन राहुल अपनी विभाजनकारी बातों से पिछड़े समुदायों का मजाक न उड़ाएं। मिस इंडिया, ओलिंपिक के लिए एथलीट्स या फिल्मों के एक्टर्स को सरकार नहीं चुनती है। रिजिजू ने रविवार को कहा- पीएम मोदी जी ने साफ कर दिया है कि केंद्र सुप्रिम कोर्ट के आईएफएस, आईपीएस, आईएफएस समेत सभी शीर्ष सेवाओं की भरती में आरक्षण में बदलाव करने की इजाजत नहीं देगी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ओबीसी से हैं। रिर्काई संख्या में कैबिनेट मंत्री हैं।



राहुल बोले थे- कॉर्पोरेट, मीडिया, बैंकिंग सिस्टम में भी दलित नहीं

राहुल प्रयागराज में 'संविधान का सम्मान और उसकी रक्षा' कार्यक्रम में शामिल हुए थे। इसमें उन्होंने जाति जनगणना का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा था- देश के कितने संस्थानों में दलितों-आदिवासियों की भागीदारी है। अगर उद्योगपतियों की लिस्ट निकालें तो एक भी बड़े उद्योगपति 90% वाले लोगों में नहीं हैं। सिर्फ कॉर्पोरेट, मीडिया, बैंकिंग सिस्टम में भी दलित नहीं हैं। कांग्रेस नेता ने अपने भाषण में कहा था- जाति जनगणना संविधान को मजबूत करने का काम है। इसको 10% ने नहीं बनाया। इसको 100% ने बनाया है। इसकी रक्षा आप लोग करते हो। अडाणी जी नहीं करते हैं। राहुल गांधी ने कहा था कि मोदीजी राजा, महाराजा, शहशाह वाला मंडल चलाना चाह रहे थे। मैंने मोदी जी को संविधान माथे पर लगाने के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन बता दें कि बीजेपी को मैं अपना गुरु मानता हूँ। उन्होंने मुझे क्या करना है, क्या नहीं करना है, सिखाया। अपने 40 मिनट की स्पीच में उन्होंने कहा- धोबी, मोची और बड़ई का देशभर में नेटवर्क है। इनके हाथों में जबर्दस्त रिस्कल और ताकत है। इनसे हाथ मिलाने से ही हवा निकल जाती है। राहुल ने सुल्तानपुर के मोची रामचैत की कहानी सुनाई। बताया कि रामचैत 40 सालों से मोची का काम कर रहे हैं।

कांस्टेबल बाबूलाल बैरवा आत्महत्या मामले पर लोगों का फूटा गुस्सा

डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा सहित सातों विधायकों को पहनाई जूतों की माला

बरसाये जूते - चप्पल, प्रशासन के साथ दूसरी वार्ता भी हुई विफल, प्रदर्शन कारियों की पहली मांग चारों आरोपियों को गिरफ्तार करे

संजीवनी टुडे

जयपुर। राजधानी जयपुर में पुलिस कांस्टेबल की आत्महत्या मामले पर अभी तक सरकार किसी भी परिणाम तक नहीं पहुंच पाई है चार दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस अभी भी खाली हाथ है वही प्रदर्शनकारी अभी भी एसएमएस हॉस्पिटल की मोचरी के बाहर प्रदर्शनरत हैं। धरने के चौथे दिन नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली,बामनवास विधायक ईंदिरा मौणा,एनएसयूआई के प्रदेशाध्यक्ष विनोद जाखड़ व अनिल चौपड़ा ने धरना स्थल पर पहुंचकर पीड़ित परिवार को ढाढ़स बंधाया व उचित न्याय दिलाने का आश्वासन दिया। प्रदर्शनकारी रवि मेघवाल, धर्मेंद्र जाटव ने बताया कि रविवार को एक प्रतिनिधि मंडल को वार्ता जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसेफ, एडीजी क्राइम दिनेश एमएन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कुंवर राष्ट्रदीप व खंडार विधायक जितेंद्र गोठवाल के साथ हुई लेकिन किसी भी बात पर सहमति नहीं बन पाई, प्रशासन का कहना है कि उक्त चारों घटना के चार दिन बीत जाने के बाद घटनास्थल पर विरोध प्रदर्शन को देखते हुए खंडार विधायक व बीजेपी नेता जितेंद्र गोठवाल धरना स्थल पर पहुंचे जहां उन्होंने



प्रदर्शन कारियों की पहली मांग यही है कि चारों आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए। उन्होंने बताया कि एससी/एसटी एक्ट के तहत दर्ज मुकदमे में तुरंत गिरफ्तारी करने का प्रावधान है लेकिन सरकार अपने चहेतों को बचाने में जुटी है।

चार दिन बाद पहुंचा सरकार का प्रतिनिधि

घटना के चार दिन बीत जाने के बाद घटनास्थल पर विरोध प्रदर्शन को देखते हुए खंडार विधायक व बीजेपी नेता जितेंद्र गोठवाल धरना स्थल पर पहुंचे जहां उन्होंने

बिजेपी नेता व विधायक जितेंद्र गोठवाल इसी तरह के मामले में हो चुके हैं गिरफ्तार

अधिवक्ता बाबूलाल बैरवा ने बताया कि वर्ष 2022 में दौसा जिले के लालसोट क्षेत्र के अंतर्गत एक ऐसा ही मामला सामने आया था जहां एक प्रसुता की मौत होने के बाद परिजनों ने डॉ अर्चना शर्मा पर लापरवाही का आरोप लगाकर हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया था जिसको लेकर बीजेपी नेता जितेंद्र गोठवाल मौके पर पहुंचकर प्रसुता को न्याय दिलाने की बात करते हैं जिस पर बाद में डॉ अर्चना शर्मा अवसाद में आकर आत्महत्या कर लेती हैं और गोठवाल को दोषी मानते हुए गिरफ्तार किया गया और उन्हें दो माह तक जेल में रहना पड़ा था। बैरवा ने बताया कि जब उस मामले में बिना किसी सबूत के गिरफ्तारी की गई थी तो अब तो मृतक बाबूलाल ने आत्महत्या से पहले आरोपियों का नाम सुरसाइड नोट में लिखा है तो इनकी गिरफ्तारी क्यों नहीं हो सकती?

भीड़ ने विधायकों पर बरसाये जूते-चप्पल

इससे पहले धरना स्थल पर प्रदर्शन कर रहे बैरवा समाज व अन्य समाज के लोगों का गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने बैरवा समाज के दूधू विधायक व डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा सहित चाकसू विधायक रामअवतार बैरवा, सिकराय विधायक विक्रम बंशीवाल,शाहपुर विधायक लालाराम बैरवा, केशोरायपटन विधायक सोपल प्रेमी, खण्डार विधायक जितेंद्र गोठवाल व अटरू विधायक राधेश्याम बैरवा के चित्र पर जूतों की माला पहनाते हुए श्रद्धांजलि भी अर्पित की, वहीं जूते-चप्पलों से उनकी पिटाई भी की। धरने पर उपस्थित लोगों ने जोरदार तारिके से मुर्दाबाद के नारे लगाते हुए दमदार प्रदर्शन किया।

एक्सपर्ट टुडे

भारतीय न्याय संहिता की धारा 108 के तहत यदि किसी व्यक्ति को आत्महत्या के लिए उकसाया जाता है या टार्चर किया जाता है तो व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता है। वहीं एससी/एसटी एक्ट के तहत भी मुकदमा दर्ज होने के कारण आरोपियों को बिना किसी अनुसंधान के बगैर गिरफ्तार किया जा सकता है।



बाबूलाल बैरवा अधिवक्ता, राजस्थान हाईकोर्ट

मलयालम एक्ट्रेस से यौन शोषण के आरोप

एसआईटी बनी, हेमा कमीशन की रिपोर्ट में दावा- हीरो करते हैं मनमानी

संजीवनी टुडे

तिरुवनंतपुरम। केरल सरकार ने मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में यौन शोषण के आरोपों की जांच के लिए एक सीनियर पुलिस अधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष जांच दल बनाने का फैसला किया है। दरअसल 19 अगस्त को हाईकोर्ट की पूर्व जज हेमा ने मलयालम इंडस्ट्री में एक्ट्रेस से साथ हो रहे दुर्व्यवहार को लेकर केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन को 295 पन्नों की एक रिपोर्ट सौंपी थी। इस रिपोर्ट में मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में चल रहे कार्टिंग काउच और सेक्सुअल हैरसमेंट जैसे गंभीर मुद्दों का जिक्र है। इस रिपोर्ट की कॉपी आरटीआई एक्ट के तहत मीडिया को भी सौंपी गई है। कमीशन की रिपोर्ट फिल्म इंडस्ट्री के अंदर हुई कई ऐसी घटनाओं पर सवाल खड़े करती है, जिससे मलयालम फिल्म इंडस्ट्री का वर्क कल्चर सवालों के घेरे में है। रिपोर्ट के मुताबिक मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में काम करने वाली कई महिलाओं ने आरोप लगाया है कि काम शुरू करने से पहले ही उनके साथ गलत हिंदांम की जाती है। रिपोर्ट में लिखा गया है कि ये चकाचौंध से भरी दुनिया है। इस बीच एक मलयाली एक्ट्रेस ने एक्टर सिद्दीकी पर दुष्कर्म का आरोप लगाया। जिसके बाद सिद्दीकी ने असोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स के महासचिव पद से इस्तीफा दे दिया। बता दें कि 300 मलयालम फिल्मों में काम कर चुके सिद्दीकी फिल्म सासनेहम सुमित्रा के लिए केरल राज्य फिल्म पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। दूसरी ओर, एक और एक्टर ने नंदम केरल जैसी अवॉर्ड विनिंग फिल्म का निर्देशन करने वाले रंजीत पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाया है। इसके बाद उन्होंने केरल चित्रकला अकादमी के प्रमुख पद से इस्तीफा दे दिया है। एक्ट्रेस के अनुसार पालेरी मानिक्यम फिल्म के निर्माण के दौरान रंजीत ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया था। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मलयालम फिल्म इंडस्ट्री कुछ मेकर्स, निर्देशकों और एक्टर्स के नियंत्रण में है। ये सभी पुरुष हैं। ये पूरे मलयालम फिल्म इंडस्ट्री को नियंत्रित करते हैं और वहां काम करने वाले लोगों पर हावी होते हैं।

दो दिन तक चला सर्व ऑपरेशन किसी के लापता होने का तथ्य नहीं मिला

संजीवनी टुडे

भीनमाल। सुधापर्वत पर शनिवार सुबह तेज मूसलाधार बारिश की वजह से दर्शन कर लौट रहे यात्रियों को तेज बहाव में बहने से एक महिला श्रद्धालु की मौके पर मौत हो गई एवं तीन यात्री घायल हो गए थे। सूचना पर पुलिस अधीक्षक ज्ञानचंद्र यादव व अतिरिक्त जिला कलक्टर दौलतराम चौधरी, पुलिस उपअधीक्षक अनुराजसिंह सिंह, जसवंतपुर उपखण्ड अधिकारी रामलाल मीणा सुधापर्वत पहुंचकर निरीक्षण किया। इस्टेबल के सहयोग से तीनों घायलों को ईलाज के बाद परिजनों के साथ वापस खाना कर दिया था। जबकि मृतका का पीएम के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया था। इसके बावजूद पुलिस-प्रशासन द्वारा एहतियात के तौर पर एसडीआरएफ व सिविल डिफेंस टीम की सहायता से तलाशी अभियान चलाया गया था। टीम ने रविवार दोपहर तक सर्व ऑपरेशन चलाकर तलाश की गई पर कोई लापता नहीं मिला। भीनमाल अतिरिक्त जिला कलेक्टर दौलतराम चौधरी ने बताया कि शनिवार को सुधापर्वत पर भारी

बारिश और यात्रियों के पानी में बहने की सूचना पर तत्काल पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए थे। उपलब्ध संसाधनों की सहायता से घायल अहमदाबाद (गुजरात) जिला अंतर्गत रूपावटी निवासी भावेशभाई पुत्र कालुभाई कोली, खेड़ा जिला अंतर्गत महदा खेड़ा निवासी बालूसिंह पुत्र दीपसिंह सोडा राजपुर व डूंगरपुर जिला अंतर्गत पुलिस थाना जोलरी के मऊरी निवासी लक्ष्मी पत्नी फऊआ जाति रेत को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया था। जहां ईलाज के बाद छुटी दी गई थी। जबकि डूंगरपुर जिला अंतर्गत गटाऊ निवासी लक्ष्मी पत्नी प्रेमचंद्र जाति आहरी की पानी में बहने से मौत हो गई थी। जिसका पीएम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया था। एडीएम दौलतराम चौधरी ने बताया कि इसके बाद भी एहतियात के तौर पर सुधापर्वत व चढ़ाई मार्ग पर पानी भरवाले क्षेत्र में एसडीआरएफ व सिविल डिफेंस टीम की सहायता से तलाशी अभियान चलाया गया था पर रविवार दोपहर तक चले इस सर्व ऑपरेशन में किसी के लापता होने की जानकारी नहीं मिली। दूसरे दिन टीमों



ने किया सर्व ऑपरेशन-दूसरे दिन भी एसडीआरएफ एवं सिविल डिफेंस टीम ने सर्व ऑपरेशन चलाकर तलाश की पर कुछ नहीं मिला। एसडीआरएफ टीम में

डिफेंस टीम में छगननाथ, जोगाराम, हरसन कुमार, जीतेन्द्र कुमार, प्रवीण कुमार, छगनलाल, मदन मीणा, सोहिलखान, महेंद्र कुमार के सदस्य मौजूद रहे। प्रशासन ने किया निरीक्षण-दूसरे दिन प्रशासन के अधिकारियों ने झरने एवं झालियों में तलाश की गई। इस दौरान उपखण्ड अधिकारी रामलाल मीणा, आरआई सीपी सेन, पटवारी राजपालसिंह, चौकी प्रभारी महिपालसिंह, रामनिवास विरनोई, किशनलाल एवं व्यवस्थापक जितेंद्रसिंह, भंवरसिंह, किरण राणा, हड़मतसिंह, अर्जुनसिंह सहित स्टाफ ने पड़ताल की गई।

इनका कहना है....

दोनों टीम जो दर्शन के लिए आए थे। उनको पूछने पर भी कोई मिसिंग नहीं पाया गया। ऐतिहासिक तौर पर यह चर्च ऑपरेशन चलाया गया था की कोई यात्री अग्न बह गया हो या कोई मिसिंग हो गया हो तो इस सर्व ऑपरेशन में उनका पता लग जाता 2 दिन में दो से चार बार हमने सर्व ऑपरेशन करवाया लेकिन किसी प्रकार का कोई भी तथ्य नहीं मिला नहीं किसी के बहने की पुष्टि

दौलतराम चौधरी (अतिरिक्त जिला कलेक्टर, भीनमाल) जसवंतपुर उपखंड अधिकारी रामलाल ने बताया कि कल भारी बारिश से श्रद्धालुओं के बहने की सूचना मिली। जिस पर जानकारी मिलते ही तुरंत मौके पर पहुंचे और पानी में बह श्रद्धालुओं को सुरक्षित बाहर निकल गया जिसमें तीन घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया वहीं घटना में एक महिला की पानी में बहने से मौत हो गई सूचना मिली थी कि एक अन्य श्रद्धालु भी पानी के साथ बह गया है। जिसके बाद सेल्फ डिफेंस टीम को एनडीआरएफ टीम को मौके पर बुलाकर जल भराव और पूरे इलाके का सर्वे किया गया। जिसमें अभी तक कोई डेड बॉडी नहीं मिली है और ना ही कोई किसी की लापता रिपोर्ट प्राप्त हुई है अगर किसी के लापता होने की जानकारी सामने आती है तो और भी जांच करवाई जाएगी।

रामलाल मीणा (उपखण्ड अधिकारी, जसवंतपुर)

खबरें फटाफट

कार्यकर्ताओं के साथ विधायक बैरवा ने सुनी मन की बात



संजीवनी टुडे
चाकसू। यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 113 वां प्रसारण को शीतला माता के बूथ संख्या 127 पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने साथ में सुना गया और मोदी सरकार हमेशा गरीबों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। वहीं इस दौरान विधायक रामावतार बैरवा, मंडल अध्यक्ष रामधन सैनी, कोटखावडा प्रधान प्रहलाद मीणा, शिवदासपुरा मण्डल अध्यक्ष ज्ञानचंद्र मीणा, कोटखावडा मण्डल अध्यक्ष नवनील लाल शर्मा, भेरुमना चौधरी, चाकसू गुर्जर समाज अध्यक्ष रामसहाय रावत, पूर्व नगर अध्यक्ष अंबालाल यादव सहित भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे हैं।

खंडेलवाल समाज झालाना डूंगरी ने किया गोट का आयोजन



संजीवनी टुडे
जयपुर। झालाना डूंगरी खंडेलवाल समाज द्वारा देलावास के बालाजी प्रताप नगर में गोट का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खंडेलवाल वैश्य समिति मालवीय नगर के अध्यक्ष विश्वभर खण्डेलवाल व पूर्व अध्यक्ष हरिकिशन वेद रहे कार्यक्रम में झालाना के सभी खंडेलवाल परिवारों बड़ चढ़कर हिस्सा लिया और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया अतिथियों ने कार्यक्रम के सराहना करते हुए ऐसे कार्यक्रम करने के लिए प्रशंसाहित किया।

एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट विषय पर वर्कशॉप



संजीवनी टुडे
जयपुर। कूक्स स्थित जयपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल के तत्वावधान में एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट विषय पर एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में मुख्य वक्ता क्लाउडगाय टेक्नॉलॉजी के सीईओ आकाश वर्मा तथा बॉस लिमिटेड के सीनियर इंजीनियर पीयूष राजलीवाल थे। इन्होंने इनोवेशन प्रोटोटाइप वैलिडेशन तथा अल्टी स्ट्रेज एंटरप्रेन्योरशिप विषयों पर वक्तव्य देते हुए विद्यार्थियों को स्टार्टअप तथा अन्य बिजनेस किस तरह शुरू किए जाएं इसके बारे में समझाया और इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं और उनके समाधान के बारे में भी समझाया। कार्यक्रम में कॉलेज निदेशक डॉ सुनीता रावत तथा कॉलेज के सभी विभाग अध्यक्ष उपस्थित रहे।

घरों-मंदिरों में आज आधी रात जन्मेंगे कान्हा, सजे मंदिर, बाजारों में रही रौनक

संजीवनी टुडे
अलवर। जिले में भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव की तैयारियों को लेकर रविवार को घरों और मंदिरों से लेकर बाजारों तक में रौनक छाई रही। चारों ओर जन्माष्टमी की तैयारियों जोरों पर चलती रही। आज की मध्य रात्रि अष्टमी और शैविणी नक्षत्र में घर घर में और मंदिरों में कान्हा का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। वहीं बाजारों में रविवार को लोग कान्हा के सजावटी वस्त्र, झूलें, लड्डू गोपाल खरीदने में जुटे रहे।

देवनारायण भगवान पदयात्रा को लेकर गुर्जर समाज की बैठक का हुआ आयोजन, सम्मानित करने का लिया निर्णय

संजीवनी टुडे

चाकसू। आगामी 6 सितंबर को चाकसू आने वाली देवनारायण भगवान की विशाल पदयात्रा को लेकर गुर्जर समाज की बैठक का आयोजन तहसील अध्यक्ष रामसहाय रावत की अध्यक्षता में किया गया और बैठक में पदयात्रा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया है। वहीं राजस्थान युवा गुर्जर महासभा प्रदेश महासचिव लालाराम धाकड़ ने बताया कि देवनारायण भगवान की विशाल पदयात्रा की सम्पूर्ण भोजन व्यवस्था तहसील अध्यक्ष रामसहाय रावत की ओर से देने की घोषणा की गई है। और साथ ही 6 सितंबर को दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, यूपी, राजस्थान वैसा, कोटपुतली, करौली, भरतपुर, धौलपुर, अलवर, जयपुर सहित देश के अनेक राज्यों से 6 सितंबर को चाकसू पहुंचने वाली विशाल पदयात्रा में पहुंचने वाले भक्ति गानों का वीरगुर्जर विकास समिति चाकसू की ओर से रात्रि विश्राम सहित सभी व्यवस्था को अंतिम रूप दिया गया है। वहीं गुर्जर समाज मिडिया प्रभारी कैलाश गुर्जर ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है कि पदयात्रा के दिन वीरगुर्जर विकास संगठन समिति चाकसू की



तरफ से चाकसू क्षेत्र के गुर्जर समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का जिन्होंने कक्षा 10-12 में लड़कियों ने 75 प्रतिशत अंक व लड़कों ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। उन छात्र-छात्राओं को वीर गुर्जर विकास संगठन समिति और से सम्मानित करने का निर्माण लिया गया। जिसके लिए चाकसू क्षेत्र के गुर्जर समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं ने जिन्होंने कक्षा 10-12 में लड़कियों ने 75 प्रतिशत अंक व लड़कों ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। उन छात्र-छात्राओं को सुचित किया जाता है कि सभी छात्र-छात्राएं समय का ध्यान रखते हुए। एक

मार्कसीट की फोटो कॉपी, व एक फोटो 30 अगस्त से पहले कोटखावडा रोड पर स्थित वीर गुर्जर विकास समिति चाकसू में जमा कराएँ, 30 अगस्त के बाद किसी भी छात्र-छात्राएँ का दस्तावेज नहीं लिए जाएँगे। इस दौरान राजस्थान युवा गुर्जर महासभा प्रदेश महासचिव लालाराम धाकड़, विरू उपाध्यक्ष विजय लाल डोई, बाबूलाल गुर्जर चाकसू, झूठाराम चौसला, 10-12 में लड़कियों ने 75 प्रतिशत अंक व लड़कों ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। उन छात्र-छात्राओं को सुचित किया जाता है कि सभी छात्र-छात्राएँ समय का ध्यान रखते हुए। एक

8 सितंबर को होगा प्रतिभा सम्मान समारोह, सेवा भारती समिति की बैठक में लिया निर्णय



संजीवनी टुडे
चौमूं। सेवा भारती समिति की आम सभा रविवार को जिलाध्यक्ष नरेशकिशोर कुलवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिला सहमंत्री धर्मेन्द्र शर्मा "पुरुषोत्तम" ने अगवत करवाया कि 8 सितंबर 2024 को मध्यहान 2.15 बजे शहर के केशव नगर स्थित बालिका आदर्श विद्या मंदिर में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित होगा। जिसमें चौमूं तहसील के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय/संस्कृत विद्यालयों की कक्षा 10 एवं कक्षा 12 के विज्ञान, कृषि, वाणिज्य तथा कला वर्ग के स्कूल टॉपर्स का सम्मान किया

जाएगा। प्रतिभा सम्मान समारोह में पंजीयन के लिए कार्यकर्ताओं की टोलियां राजकीय विद्यालयों में संपर्क कर रही है। पंजीयन के लिए 2 सितंबर 2024 अंतिम तारीख रहेगी। प्रतिभा सम्मान समारोह पोस्टर का विमोचन रणमल चौहान, विनोद दुसाद, जगदीश शर्मा, कैलाश चंद्र वर्मा, शंकर सैनी, नंदलाल बुनकर, नरिंह वर्मा, मुकेश बागडा, रामकरण बुनकर, रामअवतार दुसाद, आशोक सोनी, चन्द्रमोहन राजोरियार, विकास बुनकर, रामनारायण जांगिड, छीतरमल मुनीम, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल आदि द्वारा किया गया।

घर में घुसकर चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार, चोरी का सामान भी बरामद



संजीवनी टुडे
चाकसू। यहां रविवार को थाना पुलिस ने चोरी की वारदात पर कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। और वहीं चाकसू एसपी सुरेंद्र सिंह ने जानकारी देते बताया कि परिवारी पूजा बैरवा निवासी जय श्री श्याम आवास कुंज सेक्टर 2 सेक्टर 2 सरकारी स्कूल के पीछे वार्ड नंबर 28 निवासी ने थाने में पहुंचकर एक लिखित में चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। वहीं पुलिस अनुसंधान करते हुए पुलिस टीम के जरिए कार्रवाई करते हुए घर में से अज्ञात चोरों द्वारा चोरी का सामान जिनमें एक एलइडी, एक मॉर्जर सूत्र, पायजैब, सटका व आठ हजार नगदी चोरी कर ले गए थे और वहीं थाना अधिकारी कैलाश दान के नेतृत्व में पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए अपराधी कपिल बैरवा पुत्र जगदीश बैरवा (18) वार्ड नंबर 28 एसबीबीजे कॉलोनी निवासी, दिनेश बैरवा पुत्र जगदीश बैरवा (22) वार्ड नंबर 28 एसबीबीजे कॉलोनी कस्बा निवासी को पुलिस ने माल बरामद करके चोरी का दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस गठित टीम में : थाना अधिकारी कैलाश दान, सहायक उप निरीक्षक मनमोहन सिंह, कांस्टेबल दिनेश सिंह, राजेंद्र कांस्टेबल सहित इन पुलिस कर्मियों का इन चोरी करने वाले चोरों को गिरफ्तार करने में अहम योगदान रहा है।

डिफेंस काउंसिल के अतिरिक्त पदों की भर्ती के लिए साक्षात्कार 28 व 29 अगस्त को होगा

संजीवनी टुडे

अलवर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) दिल्ली की मोडिफाइड लीगल एड डिफेंस काउंसिल स्कीम 2022 के प्रावधान के तहत हर एक निर्धन बंदी, जरूरतमंद एवं पात्र व्यक्तियों को निःशुल्क विधिक सहायता के तहत डिफेंस काउंसिल (एलएडीसी) उपलब्ध कराए जाने हेतु अलवर जिला मुख्यालय पर डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल के 2 एवं असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल के 5 अतिरिक्त पदों पर अधिवक्तागण की भर्ती प्रक्रिया के तहत पात्र आवेदकों का 28 अगस्त एवं 29 अगस्त 2024 को दोपहर 3 बजे कॉन्फ्रेंस हॉल जिला न्यायालय अलवर में साक्षात्कार होगा। इन पदों के लिए 14 अगस्त 2024 तक प्राप्त सभी आवेदन पत्रों का निदेशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अलवर द्वारा छंटनी करने के पश्चात पात्र पाए गए आवेदकों को साक्षात्कार हेतु सूचना जिला न्यायालय परिसर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं अलवर जिले के समस्त ताल्लुका कार्यालयों के नोटिस बोर्ड पर चर्चा करने के अतिरिक्त अध्यक्ष अभिभाषक संघ अलवर को भी भेजी गई है तथा पात्र आवेदकों को जरिए ई-मेल/वाट्सएप तथा उनके मोबाइल नं. पर कॉल करके भी सूचना दी जा रही है। निःशुल्क विधिक सहायता के तहत डिफेंस काउंसिल के अतिरिक्त पदों की भर्ती निश्चय ही जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए मील का पथर साबित होगा।

खेल सप्ताह के तहत 26 से 31 तक दो पारियों में आयोजित होंगी विभिन्न खेल गतिविधियां

संजीवनी टुडे
अलवर। हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस 29 अगस्त राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में खेल व फिटनेस गतिविधियों में बडे पैमाने पर भागीदारी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 26 से 31 अगस्त तक खेल सप्ताह आयोजित होगा। अतिरिक्त जिला कलक्टर द्वितीय परसराम मीना ने बताया कि खेल सप्ताह के दौरान जिला स्तर, ब्लॉक स्तर एवं ग्राम पंचायत स्तर पर प्रतिदिन खेल दो पारियों में होंगे जिसमें प्रथम पारी में प्रातः 8 बजे से प्रातः 11 बजे तक तथा द्वितीय पारी में अपराह्न 3 बजे से सांय 6 बजे तक खेलों का आयोजन होगा। इन्होंने बताया कि 26 अगस्त को 2 किमी से 5 किमी तक की दौड़ आयोजित होगी एवं खिलाड़ियों द्वारा श्रमदान किया जाएगा। इसी प्रकार 27 अगस्त को विभिन्न वेशभूषा पर परम्परागत खेलों का आयोजन जैसे रस्साकशी, सन्तोलिया, रूमाल झपटा (बालिका), गिल्ली डण्डा, कुरती, कबड्डी, खो-खो एवं तिरंगे की गतिविधियां आयोजित होंगी। वहीं 29 अगस्त को प्रेताफेरी (2 किमी) जूनियर/सीनियर खिलाड़ियों के मध्य हॉकी खेल का आयोजन किया जाएगा एवं हॉकी खिलाड़ियों का सम्मान किया जाएगा। 30 अगस्त को वॉक, रस, बॉलीबॉल, फुटबॉल, टेनिसबॉल, क्रिकेट, बैडमिन्टन एवं शतरंज गतिविधियां आयोजित होगी तथा 31 अगस्त को बॉस्केटबॉल, टेबलटेनिस, रॉपजम्पिंग, लेमनरेस/सर्कल रस, लंगरी, लगडी व पलाक चेंलेज गतिविधि आयोजित होगी। इन गतिविधियों में विद्यालयों में अध्ययनरत राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय खिलाडी, खेल प्रशिक्षक, विद्यालयों के विद्यार्थी, एनएसएस, एनसीसी, स्काउटिंग एवं गाइडिंग गतिविधियों के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस दौरान प्रतिभागियों को फिट इंडिया की शपथ भी हिलाई जाएगी।

गोविंद देव जी मंदिर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम

संजीवनी टुडे

राजगढ़ (अलवर)। कस्बे की आस्था के केंद्र श्री राधा गोविंद देव जी मंदिर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। राजगढ़ की आस्था के केंद्र राधा गोविंद मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। मंदिर महंत गोस्वामी पंडित दिलीप मुखर्जी ने बताया कि सोमवार को भगवान श्री राधा गोविंद को प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक नवीन वस्त्र धारण कराए जाएंगे। वहीं सांय 7.30 बजे से भजन संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। तथा रात्रि 12 बजे से भगवान का अभिषेक जन्मोत्सव तथा महाआरती का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि 27 अगस्त मंगलवार को प्रातः 8 बजे श्रृंगार दर्शन, प्रातः 9 बजे से 11 तक भजन एवं नवोत्सव, कार्यक्रम की बधाईयां गई जाएगी तथा 12.30 बजे से 2 तक महा प्रसादी का आयोजन रखा गया है।



कार्यकर्ताओं ने सुना प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को लाइव



संजीवनी टुडे
चौमूं। भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल चौमूं के कार्यकर्ताओं ने बूथ संख्या 195 खादी बाग चौमूं में नगर महामंत्री मोहन लाल यादव के निवास पर प्रधानमंत्री नरेंद्र जी मोदी के 113 मन की बात एपिसोड को लाइव सुना। इस अवसर पर नगर मंडल अध्यक्ष गजानंद कुमावत, नगर महामंत्री मोहनलाल यादव, मदन गोरा, चेतन सैनी, नारायण यादव, शंकर यादव, राजू गोरड, मनोज कुमावत, कमलेश यादव, रतन यादव, यशवीर यादव, जय नारायण यादव, कन्हैया लाल यादव, राजू यादव आदि अनेक बूथ के कार्यकर्ताओं के साथ मोदी जी के मन की बात सुनी।

आज होगा 16 वॉ नटखट गौपाल - मटकी फोड़ महोत्सव



संजीवनी टुडे
चौमूं। श्री कृष्ण युथ क्लब के तत्वावधान में आज जयपुर रोड स्थित रामबाग गार्डन में 16 वॉ नटखट गौपाल-मटकी फोड़ महोत्सव का भव्य आयोजन होगा। युथ क्लब अध्यक्ष अर्जुन यादव एवं कोरियोग्राफर प्रदीप शर्मा ने बताया कि इस बार स्कूली बच्चों के साथ साथ दिल्ली के कलाकारों के द्वारा भक्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार की झांझियां, भव्य कृष्ण दरबार, भव्य आतिशय आदि एवं प्रसादी वितरण भी किया जाएगा। कार्यक्रम में आने वाले बालगोपालो को उपहार दिया जाएगा।

मदन मोहन राजौर की पहल से स्थानीय गांव के विद्यालय में अस्थायी वरिष्ठ अध्यापकों के नियुक्ति आदेश जारी

संजीवनी टुडे
टोडाभौम (गंगापुर्सिटी) भारतीय किसान यूनियन लोकशक्ति राजस्थान प्रदेश प्रभारी मदन मोहन मीना को स्थानीय गांव राजौर विद्यालय के कार्यकारी प्रधानाचार्य वीरेंद्र कुमार योगी द्वारा पत्र लिखकर प्रधानाचार्य एवं वरिष्ठ अध्यापकों के रिक्त पद पर कार्मिक लगवने का अनुरोध किया था। कार्यकारी प्रधानाचार्य ने बताया की स्थानीय विद्यालय सत्र 2023-24 में उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक में क्रमोन्त हुआ है। एवं वर्तमान में कक्षा 10 तक संचालित है जिसमें प्रधानाचार्य एवं वरिष्ठ अध्यापक के पद रिक्त है बोर्ड परीक्षाओं के विद्यार्थियों को पढ़ाई सुचारु रूप से हो सके इसलिए हल ही इन रिक्त पदों पर कार्मिकों लगाए जाए। प्रदेश प्रभारी द्वारा तत्काल संज्ञान में लेकर जिला शिक्षा अधिकारी गंगापुर्सिटी एवं उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया। जिसके संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय गंगापुर्सिटी द्वारा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी टोडाभौम भंवर सिंह को छात्र हित को ध्यान में रखते हुए तुरंत अस्थायी व्यवस्था हेतु वरिष्ठ अध्यापक लगाने के निर्देश जारी किए। इस प्रयास के लिए समस्त विद्यालय स्टाफ एवं छात्र छात्राओं द्वारा प्रदेश प्रभारी मदन मोहन राजौर का आभार जताया।

खबरें फटाफट

भाजपा सदस्यता अभियान को लेकर बैठक आज

संजीवनी टुडे

राजगढ़ (अलवर)। भारतीय जनता पार्टी मंडल राजगढ़ की सदस्यता अभियान को लेकर बैठक मण्डल अध्यक्ष राहुल दीक्षित की अध्यक्षता में आज प्रातः 11:00 बजे तुषार मैरिज गार्डन कारोठ रोड राजगढ़ पर होगी। कार्यक्रम संयोजक प्रदीप शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला उपाध्यक्ष विष्णु शर्मा, राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ के भाजपा प्रत्याशी बना नारा मीणा, जिला मंत्री मीना सैनी होंगी। बैठक में जिला पदाधिकारियों अभियान के प्रमुख उद्देश्यों जैसे दस करोड़ प्लस सदस्य बनाना, राष्ट्र निर्माण की प्रतिज्ञा - विकसित भारत 2047, सर्व व्यापी भाजपा, सर्व स्पर्शी भाजपा - समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना जैसे विषय पर चर्चा की जाएगी। कार्यक्रम में सभी भाजपा मण्डल पदाधिकारी जिला पदाधिकारी जनप्रतिनिधियों व समस्त भाजपा कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया है।

राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ में राष्ट्रीय खेल सप्ताह का आयोजन आज से

संजीवनी टुडे

राजगढ़ (अलवर)। कस्बे के राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 26 अगस्त से 31 अगस्त तक खेल सप्ताह मनाया जाएगा। इसके तहत महाविद्यालय में विभिन्न खेल गतिविधियों आयोजित की जाएगी। प्राचार्य प्रोफेसर के एल मीना ने बताया कि युवा मामले एवं खेल विभाग राजस्थान सरकार के प्रस्ताव अनुसार विद्यार्थियों को खेल और फिटनेस गतिविधियों में बढ़े पैमाने पर भागीदारी को प्रोत्साहित करने एवं परंपरागत खेलों से जोड़ने हेतु रस्सा-कस्सी, गिल्ली-डंडा, कुश्ती, खो-खो, रुमाल झपटा, लंगड़ी, रस आदि खेलों का आयोजन किया जायेगा। आयोजन में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को स्वच्छता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भी जोड़ा जाएगा साथ ही हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस अवसर पर सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को दिशा निर्देश के अनुसार फिट इंडिया की शपथ दिलाई जाएगी।

जगन्नाथ मंदिर में नवम दही हांडी महोत्सव का आयोजन आज

संजीवनी टुडे

राजगढ़ (अलवर)। कस्बे के चौपड़ बाजार स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर पर सोमवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव के पावन पर्व पर नवम दही हांडी महोत्सव का आयोजन होगा। श्री जगन्नाथ मंदिर के महंत पूर्ण दास व पंडित मदन मोहन शास्त्री तथा समिति अध्यक्ष दीनदयाल मंडावरा व कोषाध्यक्ष हरिओम गुप्ता ने बताया कि इस बार आयोजित होने वाली नवम दही हांडी महोत्सव का आयोजन का कार्यक्रम 26 अगस्त को सांयकाल 7 बजे भगवान श्री जगन्नाथ जी महाराज की भव्य झांकी के दर्शन के साथ होगा। रात्रि 8 बजे से दही हांडी महोत्सव का कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम में राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ के विधायक मांगीलाल मीणा मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थानाधिकारी रामजीलाल मीणा, व्यापार मंडल अध्यक्ष बसंत गुप्ता रहेंगे। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता उपखंड अधिकारी सीमा खेतान करेंगी। कार्यक्रम के अन्य सम्मानित अतिथि मेला कमेटी अध्यक्ष एडवोकेट महेंद्र प्रसाद तिवारी, विधि सलाहकार एडवोकेट विश्वास मित्तल, खेम सिंह आर्य, बेनी प्रसाद सैनी आदि मौजूद रहेंगे। इससे पूर्व दही हांडी महोत्सव की तैयारियों शुरू हो गई हैं। जिसमें प्रथम विजेता को 2100 रूपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल सप्ताह का आयोजन

संजीवनी टुडे

राजगढ़। स्थानीय राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर दिनांक 26 से 31 अगस्त 2024 तक खेल सप्ताह मनाया जायेगा। इसके तहत महाविद्यालय में विभिन्न खेल गतिविधियों आयोजित की जायेगी। प्राचार्य प्रो. के. एल. मीना ने बताया कि युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार के प्रस्ताव अनुसार विद्यार्थियों को खेल और फिटनेस गतिविधियों में बढ़े पैमाने पर भागीदारी को प्रोत्साहित करने एवं परम्परागत खेलों से जोड़ने हेतु रस्सा-कस्सी, गिल्ली डण्डा, कुश्ती, खो-खो, रुमाल झपटा, लंगड़ी, रस आदि खेलों का आयोजन किया जायेगा। आयोजन में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को स्वच्छता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भी जोड़ा जायेगा साथ ही हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को गाईडलाईन के अनुसार फिट इण्डिया की शपथ दिलाई जायेगी।

उदयपुर में 25 लाख की अवैध शराब पकड़ी: रात को अंधेरे में ट्रक छोड़ भागा ड्राइवर

संजीवनी टुडे

उदयपुर। उदयपुर की प्रतापनगर थाना पुलिस ने गुजरात तस्करी कर ले जाई जा रही 25 लाख रूपए की अवैध अंग्रेजी शराब को जब्त किया है। पुलिस ने ट्रक को जब्त करते हुए उसमें से 235 कटन अंग्रेजी शराब जब्त की। थानाधिकारी भरत योगी ने बताया- शनिवार रात गश्त के दौरान ट्रक चालक पुलिस को देखकर तेज स्पीड में भागने लगा। पुलिस ने 2 किमी तक उसका पीछा किया।

कला मनुष्य को अच्छा इंसान बनाती है: पद्मश्री रंजना गौहर, विश्वविख्यात ओडिसी नृत्यांगना से बातचीत

संजीवनी टुडे

उदयपुर। विश्वविख्यात ओडिसी नृत्यांगना पद्मश्री रंजना गौहर का मानना है कि कला व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाने में सहायक है, इसलिए हर व्यक्ति को कला से किसी न किसी माध्यम से जुड़ाव रखना चाहिए। ओडिसी, कथक, भारतनाट्यम और छऊ नृत्य शैलियों पर समान अधिकार रखने वाली रंजना गौहर पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम महलार में प्रस्तुति देने के लिए उदयपुर आईं।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य को देश-दुनिया में विशिष्ट पहचान दिलाने के कारण 2003 में पद्मश्री से सम्मानित रंजना गौहर के उदयपुर प्रवास के दौरान शिल्पग्राम स्थित दर्पण सभागार में उनके शास्त्रीय नृत्य विधा से जुड़ाव, अब तक के सफर, चुनौतियों, उपलब्धियों आदि पर विस्तृत चर्चा हुई। इसमें गौहर ने संगीत और नृत्य के प्रति युवा पीढ़ी के बढ़ते रुझान पर संतोष व्यक्त किया, वहीं दूसरी ओर कला की साधना में समर्पण की कमी पर चिन्ता भी व्यक्त की। श्री गौहर की सहायक जनसंपर्क अधिकारी विनय सोमपुरा से हुई बातचीत के संपादित अंश.....

सूजस: उदयपुर में आपका स्वागत है। कैसा महसूस कर रहे?

रंजना: बहुत खुश हूं, आनंदित हूं। सच पूछिए तो इतना सुंदर सावन कहीं नहीं देखा। झीलों, हरी भरी पहाड़ियां और रिमझिम बारिश सचमुच अद्वितीय अनुभव है। महलार में प्रस्तुति देने आए हैं तो मेघों की मल्हार की संगत को मिलनी ही है। प्रकृति और कला का तो बहुत गहरा नाता है। प्रकृति कलाकारों को उत्साहित करती है और कला प्रकृति के रंगों को द्विगुणित करने में सहायक है। राग महलार की ही बात ले लो, हमारे कलाकार भी इसे अधिक पसंद करते हैं।

सूजस: आपने भारतीय शास्त्रीय नृत्य खास कर ओडिसी नृत्य को नई ऊंचाईयां दी। कथक से शुरूआत कर ओडिसी की ओर झुकाव कैसे हुआ ?

रंजना: 60 के दशक की शुरूआत में हम दिल्ली में रहते थे। उस समय मैं 4-5 साल की थी। घर के पास कथक स्कूल चलता था। उस समय पता नहीं था कि कौनसा नृत्य है, बस तबला बजता था और नृत्य करते थे। पिताजी भी वाद्य बजाते थे, तो नाचते लग जाती थी। इस पर पिताजी ने कथक स्कूल ज्वाइन करा दी। काफी सालों बाद शायद जब मैं 17-18 साल की थी तब



दिल्ली में स्टेज शॉ में ओडिसी नृत्य की परफोमेंस देखी, तब मुझे लगा कि बस यही है मेरी आत्मा की आवाज। शायद यह संयोग ईश्वर का ही आशीर्वाद था। ठान लिया कि ओडिसी सीखना है, लेकिन कोई गुरु नहीं मिला। काफी लोगों ने ओडिशा जाकर सीखने की सलाह दी, लेकिन पिताजी से अनुमति नहीं मिली। आखिरकार 3-4 साल बाद दिल्ली में ही गुरु मिले और इसके बाद से पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

सूजस: आपको शास्त्रीय नृत्य में नवाचारों के लिए जाना जाता है, उनके बारे में कुछ बताएं...

रंजना: देखिए कलाकार वही है जिनमें सृजनमत्कता है। कलाकार हर विषय-वस्तु को अलग ढंग से देखता है। प्रयोग और नवाचार कला और कलाकार दोनों को तरोताजा रखते हैं। इसलिए ओडिसी नृत्य में प्रयोग किए। गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महाभारत की एक पात्र चित्रांगदा पर बंगाली में गीत लिखे हैं। मैंने उन गीतों को सुना, चित्रांगदा के बारे में गुरुदेव जो कहना चाह रहे थे उसे समझने के लिए कई किताबें पढ़ीं, कई लोगों से बातचीत की। इसके बाद उसे नृत्य में ढाला। वह इतना पसंद किया गया कि 100 से ज्यादा स्टेज शॉ में उसे परफोमें किया। इसी तरह नल-दमयंती की कथा पर प्रस्तुति तैयार की। इसमें एनिमेशन का भी उपयोग किया। अभी कुछ समय पहले संत कबीर को लेकर भीष्म साहनी की पुस्तक कबीरा खड़ा बाजार में... पर नृत्य-नाटिका तैयार की, जिसे बहुत पसंद किया जा रहा है।

सूजस: अब तक के सफर में किस तरह की चुनौतियां आईं ?

रंजना: चुनौतियां तो हर राह पर मिलती हैं, लेकिन लगन, जुनून के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। यदि आपका लक्ष्य-उद्देश्य पवित्र है और आपके प्रयासों में ईमानदारी है तो डगर स्वतः मिलती है, इतना ही नहीं मार्ग

की कठिनाईयों भी खुद-ब-खुद हटती जाती हैं। सूजस: आपके शुरूआती दौर तथा वर्तमान समय में क्या फर्क महसूस करती हैं ?

रंजना: जमीन-आसमान का फर्क है, ऐसा लगता है जैसे हम किसी और ही प्लेनेट पर आ गए हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया ने सभी क्षेत्रों की तरह कला क्षेत्र को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। निश्चित रूप से कला को सीखने वालों की संख्या बढ़ती है, लेकिन वह जोश, जुनून और लगन नजर नहीं आती। पहले की तरह गुरु-शिष्य परंपरा के भाव, कला के प्रति समर्पण, कलाकार का व्यवहार अब देखने को नहीं मिलते। लोगों को कम समय में कामयाब बनना है और कामयाबी का पैमाना सिर्फ पैसा कमाना रह गया है। आज कला के बारे में कुछ नहीं जानने वाला भी खुद को ग्रेट आर्टिस्ट के रूप में प्रजेंट करता है। लोग इसे मान भी लेते हैं। दूसरी ओर जो वाकई अच्छे कलाकार हैं, वे गुमनामी में जी रहे हैं।

सूजस: युवा पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहेंगी ?

रंजना: भारत की सांस्कृतिक धरोहर विश्व में बेजोड़ है। युवा पीढ़ी को इन्हीं सांस्कृतिक विरासतों-धरोहरों को समझने, पहचानने, उनका आदर करने तथा उन पर गर्व करने की जरूरत है, क्योंकि यह विश्व भर में दुर्लभ है।

डीएसटी की अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ कार्यवाही, 74 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थों के सहित क्रेटा कार जब्त

संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। जिला विशेष टीम व कोतवाली चित्तौड़गढ़ थाना पुलिस ने कोतवाली थाना क्षेत्र में अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए 74 किलोग्राम अवैध डोडा चूरा सहित क्रेटा कार को जब्त किया है। जिला पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर जोशी ने बताया कि पुलिस मुख्यालय के आदेशानुसार जिले में अवैध मादक पदार्थों की धरपकड़ कर तस्करो के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने हेतु समस्त थानाधिकारियों व जिला विशेष टीम को विशेष दिशा-निर्देश दिये गये है ः इसी क्रम में जिला विशेष टीम को सूचना मिली कि कोतवाली थाना क्षेत्र में घटियावली से राजपुरिया की तरफ आने वाली काले रंग की क्रेटा कार में अवैध डोडा चूरा का परिवहन किया जा रहा है ः जिला विशेष टीम ने तत्काल इस सूचना से कोतवाली थाना पुलिस को अवगत कराया ः जिस पर थाने से राजाराम मीणा उपनिरीक्षक जापो सहित राजपुरिया गांव के बाहर पहुंचे जहां जिला विशेष टीम की सूचना के मुताबिक घटियावली की तरफ से



आती हुई काले रंग की क्रेटा कार दिखाई दी जिसमें तीन व्यक्ति सवार थे ः पुलिस टीम ने संदिग्ध कार को रुकवाने का प्रयास किया तो कार चालक गाड़ी को अचानक तेज गति से भगाकर राजपुरिया गांव की तरफ ले गया, जिसका पुलिस टीम ने लगातार पीछा किया ः तेज गति से भागते समय क्रेटा कार का पहिया रास्ते में पड़े पत्थर से टकराने के कारण फूट कर

ब्रस्ट हो गया जिस कारण कार रुक गई ः कार चालक व उसके दो साथी कार को मौके पर छोड़कर फरार हो गए जिनकी पुलिस टीम ने काफी तलाश की, किंतु रात का समय व बारिश होने के कारण तीनों भागने में सफल रहे ः पुलिस ने नियमानुसार क्रेटा कार की तलाशी ली तो गाड़ी में 5 कट्टों में भरा हुआ 74 किलोग्राम अवैध अफीम डोडा चूरा मिला ः पुलिस ने नियमानुसार क्रेटा कार व अवैध डोडाचूरा को जब्त लिया है ः पुलिस थाना कोतवाली चित्तौड़गढ़ पर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मामला दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान जारी है।

उक्त कार्यवाही में निम्न सदस्यों का योगदान रहा

जिला विशेष टीम प्रभारी गोरधन सिंह पुलिस निरीक्षक, कांस्टेबल चन्द्र करण सिंह, अजय, दुर्गा राम व दिनेश। पुलिस थाना कोतवाली चित्तौड़गढ़। राजाराम उपनिरीक्षक, कांस्टेबल ओम प्रकाश, धर्मेन्द्र, दिलीप व राधेश्याम ।

गांवों में आधारभूत ढांचा मजबूत कर हरसंभव राहत प्रदान करने के लिए कृत संकल्पित: गोदारा

संजीवनी टुडे

लूणकरणसर। कैबिनेट मंत्री सुमित गोदारा ने रविवार को लूणकरणसर विधानसभा क्षेत्र के शेखसर, खोडाला, किसनासर में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण किया। गांव शेखसर में कैबिनेट मंत्री गोदारा ने 25 लाख रूपए की लागत से नवनिर्मित सार्वजनिक पुस्तकालय का फीता काट कर उद्घाटन किया। गोदारा ने कहा कि पुस्तकालय बच्चों व युवाओं में पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करते हैं।

बालकों और युवाओं में बढ़ती मोबाइल लत के कारण पुस्तकों से बन रही दूरी को लाइब्रेरी से जुड़कर कम किया जा सकता है। उन्होंने युवाओं को लाइब्रेरी से जुड़ने की अपील की। इससे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। कैबिनेट मंत्री सुमित ने खोडाला में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में दस लाख रूपए की लागत से बने दो कक्षा-कक्ष, जसनाथजी की बाड़ी में पांच लाख रूपए की लागत राशि के निर्मित सामुदायिक भवन, 32 लाख 50 हजार रूपए से नवनिर्मित द्यूबवेल



सहित खोडाला में ही जीएसएस पर पांच एमवीए का अतिरिक्त ट्रांसफार्मर का लोकार्पण कर ग्रामीणों को बड़ी सौगात दी।

वही गांव किसनासर में भी पांच एमवीए का अतिरिक्त ट्रांसफार्मर का लोकार्पण किया। प्रधान कानाराम गोदारा ने भी विचार रखे। इस अवसर पर कैलाश सारस्वत, सरपंच यूनिनयन जिलाध्यक्ष राजाराम झोरड, तहसील अध्यक्ष अमराराम सिपाग, पूर्व जिला परिषद सदस्य सारंतराम पंचार,

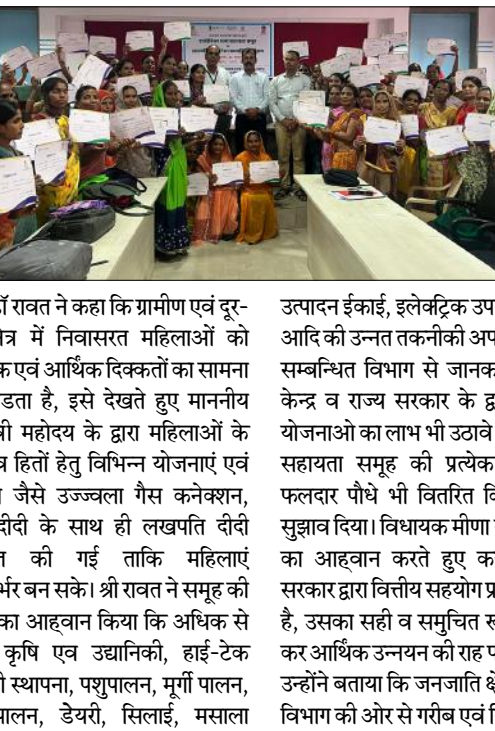
गोवर्धन लाल भादु, सीताराम गोदारा, मालदास स्वामी, विनोद चौपड़ा, राजूदास स्वामी, जितेन्द्र गोदारा, गणेश गौरीसरिया, राकेश नायक, महेंद्र सारस्वत, महावीर गाट सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। विकास कार्यों की घोषणा की: शेखसर विद्यालय में कक्षा कक्ष के लिए 21 लाख, खोडाला जसनाथ जी बाड़ी की चारदिवारी के लिए 5 लाख व खोडाला में एक द्यूबवेल स्वीकृत करवाने की घोषणा की।

2250 लखपति दीदी व 750 कर्म्युनिटी रिसोर्स पर्सन का हुआ सम्मान

लखपति दीदी सम्मान कार्यक्रम: 161 स्वयं सहायता समूह को मिला 24.15 लाख रूपए रिवोल्विंग फण्ड

संजीवनी टुडे

उदयपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की पहल पर देश के विभिन्न गांवों में स्वयं सहायता समूह की 3 करोड़ सदस्यों को लखपति दीदी में परिवर्तित कर "लखपति दीदी" की उपाधि से सम्मानित किया जा रहा है। राजीविका के स्वयं सहायता समूह दीदीयो को लखपति दीदी से सम्मानित करने रविवार को जलगांव महाराष्ट्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसी कड़ी में जिला स्तर व पंचायत समिति स्तर पर भी कार्यक्रम संचालित किए गए। इसमें कुल 2250 लखपति दीदी व 750 कर्म्युनिटी रिसोर्स पर्सन का सम्मान किया गया। उदयपुर में पंचायत समिति गिर्वा के सभागार में सांख्य डॉ मन्नालाल रावत और उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा के आतिथ्य में लखपति दीदी सम्मान कार्यक्रम हुआ। प्रारंभ में राजीविका के जिला परियोजना प्रबंधक ख्यालीलाल खटीक ने ने अतिथियों का स्वागत किया। जिला स्तरीय कार्यक्रम में 170 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए



सांख्य डॉ रावत ने कहा कि ग्रामीण एवं दूर-दराज क्षेत्र में निवासरत महिलाओं को परिवारिक एवं आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, इसे देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री महोदय के द्वारा महिलाओं के उत्थान व हितों हेतु विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम जैसे उज्ज्वला गैस कनेक्शन, डिवायक फूलसिंह मीणा के आतिथ्य में लखपति दीदी सम्मान कार्यक्रम हुआ। प्रारंभ में राजीविका के जिला परियोजना प्रबंधक ख्यालीलाल खटीक ने ने अतिथियों का स्वागत किया। जिला स्तरीय कार्यक्रम में 170 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

उत्पादन ईकाई, इलेक्ट्रिक उपकरण मरम्मत आदि की उन्नत तकनीकी अपनाएं। इस हेतु सम्बन्धित विभाग से जानकारी प्राप्त कर केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ भी उठावे। उन्होंने स्वयं सहायता समूह की प्रत्येक महिला को फलदार पौधे भी वितरित किए जाने का सुझाव दिया। विधायक मीणा समूह सदस्यों का आह्वान करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा वित्तीय सहयोग प्रदान की जाती है, उसका सही व समुचित रूप से उपयोग कर आर्थिक उन्नयन की राह पर अग्रसर हों। उन्होंने बताया कि जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की ओर से गरीब एवं निम्न आय की

जाशमा शनि महाराज मंगरा के पहाड़ी पर अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि ने गुलेल के बीजों का छिड़काव

संजीवनी टुडे

जाशमा/कपासन। घटते वन क्षेत्रों और पेड़ों की कमी को दूर करने के लिए सरकार अपने स्तर कई तरह के प्रयास और उपाय कर रही है। लेकिन पिछले छ वर्षों से जंगलों को घना बनाने और जरूरतमंद पेड़ों की संख्या बढ़ाने के लिए करियर संस्थान राजसमन्द द्वारा पौधरोपण के साथ-साथ पिछले दो महीनों से सीड्स बॉल अभियान चलाया जा रहा है जिसमें सीड्स बॉल तकनीक का उपयोग लिया जा रहा है इसी क्रम में कपासन के शनि देव मंदिर ग्राम जाशमा पहाड़ी पर गायत्री परिवार, श्री राधे गौशाला पंचतत्व आरोग्य सेवा संस्थान, करियर संस्थान राजसमंद द्वारा सीड्स बॉल कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी, कपासन विधायक अर्जुन लाल जीगर, भूपाल सागर प्रधान हेमेंद्र सिंह राणावत, पूर्व विधायक डेरी चैयमैन बदीलाल जाट, विकास अधिकारी पंचायत समिति भूपाल सागर नवीन कुमार गौड़, जाशमा गाम के सरपंच देवी लाल लोहार, द्वारा पहाड़ियों पर गुलेल के माध्यम से सीड्स बॉल का छिड़काव किया। सामाजिक कार्यकर्ता भावना पालीवाल ने बताया की संस्था पिछले 6 साल से सीड्स बॉल टेक्निक का प्रयोग कर रही है बारिश के समय सक्सेसफुल 70 प्रतिशत से भी ज्यादा रहता है। 2019 में 10



हजार, 2020 में 17 हजार, 2021 में 25000 और 2022 में 30000, 2023 में 40000 सीड्स बॉल का छिड़काव भीम, देवाढ़, आमेट और कुम्भलगढ़ में कर चुके है और इस वर्ष 50 हजार से अधिक सीड्स बॉल छोड़ने का लक्ष्य है सीड्स बॉल के द्वारा मुख्य तौर पर नीम, पीपल, बबूल, रोहिडा, अमलताश, करंज, बड़, शीशम तथा जामुन आदि के बीज थे। छिड़काव से पहले इन सीड्स बॉल को भिगोकर रखा गया ताकि थोड़ी सी भी मिट्टी मिलते ही यह बीज जड़ पकड़ लें। सीड बॉल तैयार करने के लिए सबसे पहले बीज एकत्रित करना होगा। उपजाऊ मिट्टी के साथ

गोबर या कम्पोस्ट खाद की बराबर मात्रा में मिश्रण तैयार कर गीला किया जाता है। उसे लड्डू के रूप में बनाकर बीजों-बीज बीज डालकर बंद कर दिया जाता है। ऐसे जगह रखकर सुखाया जाता है जहां सूरज की किरण न पहुंच सके। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि धूप की किरण नहीं पड़ने से गीली मिट्टी के बीच में रहने के बाद भी बीज अंकुरित नहीं होता है। सीड बॉल को पूर्ण रूप से सूख जाने पर अपने हिस्साव से खाली पड़े स्थानों पर बारिश के मौसम में छोड़ दिया जाता है। मिट्टी जैसे ही गीली होती है बीज अंकुरित हो जाएगा और नए पौधे तैयार हो जाएंगे।

राष्ट्रीय खेल सप्ताह के तहत 26 से 31 अगस्त तक होंगे आयोजन

संजीवनी टुडे

सोमवार को मैराथन दौड़ से होगा आगाज

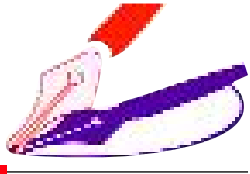
राजसमंद। राष्ट्रीय खेल सप्ताह के तहत जिले में विविध कार्यक्रम होंगे। जिला खेल अधिकारी धर्म देव सिंह ने बताया कि 29 अगस्त को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष केंद्र और राज्य सरकार ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के फिट इंडिया मिशन के तहत इसे दिनांक 26 से 31 अगस्त तक राष्ट्रीय खेल सप्ताह के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। राष्ट्रीय खेल सप्ताह का शुभारंभ 26 अगस्त को लालकृष्ण स्टेडियम, कांकोरोली से मैराथन दौड़ के साथ होगा। इस मैराथन में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एवं खिलाड़ी, विभिन्न खेल संघों के पदाधिकारी एवं खिलाड़ी, राजस्थान पुलिस, नेहरू युवा केंद्र, युवा बोर्ड, विद्यालय और महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं, एनएसएस, एनसीसी, भारतीय स्काउट्स ग्राइड तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी हिस्सा लेंगे। इस



अवसर पर प्रतिभागियों को प्रतिदिन 30 मिनट अपनी फिटनेस पर ध्यान देने, सक्रिय और स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाने, अपने परिवार और पड़ोसियों को भी स्वास्थ्य रहने के लिए प्रोत्साहित करने और फिट इंडिया मोबाइल एप्लिकेशन पर फिटनेस मूल्यांकन का प्रशिक्षण लेने की शपथ दिलाई जाएगी। राष्ट्रीय खेल सप्ताह के सफल आयोजन में शिक्षा विभाग के अधिकारियों और शारीरिक शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय



डिजिटल माध्यमों से मिल रही हैं प्रिंट मीडिया को गंभीर चुनौतियां



भारत के बाजार आज भी प्रिंट मीडिया की प्रगति की सूचनाओं से आह्लाहित हैं। हर साल अखबारों के प्रसार में वृद्धि देखी जा रही है। रोज अखबारों के नए-नए संस्करण निकाले जा रहे हैं। कई बंद हो चुके अखबार फिर उन्हीं शहरों में दस्तक दे रहे हैं, जहां से उन्होंने अपनी यात्रा बंद कर दी थी। दुनिया के तमाम प्रगतिशील देशों से सूचनाएं मिल रही हैं कि प्रिंट मीडिया पर संकट के बादल हैं। यहां तक कहा जा रहा है कि बहुत जल्द अखबार लुप्त हो जाएंगे। वर्ष 2008 में जे. गोमेज की किताब 'प्रिंट इन डेज' इसी अवधारणा पर बल देती है। इस किताब के बारे में लाइब्रेरी रिव्यू में एंटोनी चिथम ने लिखा, 'ह्रयह किताब उन सब लोगों के लिए 'वेकअप काल' की तरह है, जो प्रिंट मीडिया में हैं किंतु उन्हें यह पता ही नहीं कि इंटरनेट के द्वारा डिजिटल दुनिया किस तरह की बन रही है। डूबे बावजूद इसके क्या खतरा इतना बड़ा है। क्या भारतीय बाजार में वही घटनाएं दोहराई जाएंगी, जो अमेरिका और पश्चिमी देशों में घटित हो चुकी हैं। इन्हीं दिनों में भारत में कई अखबारों के बंद होने की सूचनाएं मिली हैं तो दूसरी ओर कई अखबारों का प्रकाशन भी प्रारंभ हुआ है। ऐसी मिली-जुली तस्वीरों के बीच में आवश्यक है कि इस विषय पर समग्रता से विचार करें।

भारत के बाजार आज भी प्रिंट मीडिया की प्रगति की सूचनाओं से आह्लाहित हैं। हर साल अखबारों के प्रसार में वृद्धि देखी जा रही है। रोज अखबारों के नए-नए संस्करण निकाले जा रहे हैं। कई बंद हो चुके अखबार फिर उन्हीं शहरों में दस्तक दे रहे हैं, जहां से उन्होंने अपनी यात्रा बंद कर दी थी। भारतीय भाषाओं के अखबारों की तृती बोलो रही है, रीडरशिप सर्वेक्षणों या प्रसार के आंकड़े सब बता रहे हैं कि भारत के बाजार में अभी अखबारों की बढ़त जारी है।

भारत में अखबारों के विकास की कहानी 1780 से प्रारंभ होती है, जब जेम्स आगस्टस हिक्की ने पहला अखबार 'बंगाल गजट' निकाला। कोलकाता से निकला यह अखबार हिक्की की जिव, जुनून और सच के साथ खड़े रहने की बुनियाद पर रखा गया। इसके बाद हिंदी में पहला पत्र या अखबार 1826 में निकला, जिसका नाम था 'उदंत मारतण्ड', जिसे कानपुर निवासी युगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से ही निकाला। इस तरह कोलकाता भारतीय पत्रकारिता का केंद्र बना। अंग्रेजी, बंगला और हिंदी के कई नामी प्रकाशन यहां से निकले और देश भर में पड़े गए। तबसे लेकर आज तक भारतीय पत्रकारिता ने सिर्फ विकास का दौर ही देखा है। आजादी के बाद वह और विकसित हुई। तकनीक, छाप-छपाई, अखबारी कागज, कंटेनर हर तरह की गुणवत्ता का विकास हुआ। हिंदी और अंग्रेजी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं के अखबारों ने कमाल की प्रगति की। देश का आकर और आबादी इसमें सहायक बनी। जैसे-जैसे साक्षरता बढ़ी और समाज की आर्थिक प्रगति हुई, अखबारों के प्रसार में भी बढ़त होती गयी। केरल जैसे राज्य में मलयाला मनोरमा और मातृभूमि जैसे अखबारों की विस्मयकारी प्रसार उपलब्धियों को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इसे ठीक से जानने के लिए राबिन जैर्री के अध्ययन को देखा जाना चाहिए। इसी दौर में सभी भारतीय भाषाओं के अखबारों ने अभूतपूर्व विस्तार और विकास किया। उनके जिलों, स्तरों से संस्करण प्रारंभ हुए और 1980 के बाद लगभग हर बड़े अखबार ने बहुसंस्करणीय होने पर जोर दिया। 1991 के बाद भूमंडलीकरण, मुक्त बाजार की नीतियों को स्वीकारने के बाद यह विकास दर और तेज हुई। पूंजी, तकनीक, तीव्रता, पहुंच ने सारा कुछ बल दिया। तीन दशक सही मायने में मीडिया क्रांति का समय रहे। इसमें माध्यम प्रतिस्पर्धी होकर एक-दूसरे को की शक्ति दे रहे थे। टीवी चैनलों की बाढ़ आ गई। वेब-माध्यमों का तेजी से विकास हुआ। अखबारों के मुद्रण के लिए विदेशी मशीनें भारतीय जमीन पर उतर रही थीं। विदेशी कागजों पर अखबार छापे जाने लगे थे। यह वही दौर था जब काले-सफेद अखबार अचानक से रंगीन हो उठे। नवें दशक में ही भारतीय अखबारों के उद्योगपति विदेशी कंपनियों से करार कर रहे थे। विदेशी पूंजी के आगमन से अखबार अचानक खुश-खुश से दिखने लगे। उदारीकरण, साक्षरता, आर्थिक प्रगति ने मिलकर भारतीय अखबारों को शक्ति दी। भारत में छपे हुए शब्दों का मान बढ़त है। अखबार हमारे यहां स्टेट्स सिंबल की तरह हैं। टूटती सामाजिकता, मांग कर पढ़ने में आती हिचक और एकल परिवारों से अखबारों का प्रसार भी बढ़ा।

आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।



मेघ (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ): आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,ठी,वू,वे,वो): सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

मिथुन (क,की,फ़,घ,उ, छ, के,को, ह): कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपके बड़ते प्रभाव से कुछ लोगों को पंशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो): किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अधूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे): परिवार के बड़े सदस्यों को आज मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

कन्या (टो, पा, पी, प, घ, ण, ठ, पे, पो): आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सहायता होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ष प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते): आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू): व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

धनु (ये, यो, म, मी, मू, धा, फा, डा, मे): आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहे तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

मकर (भो, जा, जी, जू, ज्ये, ज्ये, ज्यो, गी): आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

कुंभ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा): आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसको नजरअंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

मीन (दी, दू, ध, झ, ज, दे, दो, वा, वी): आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बड़ी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएँ, अन्य कामों में भी जल्दबाजी ना करें।

मदर टेरेसा: शांति-सेवा की पैगम्बर एवं मातृहृदया थी



विचार बिन्दु

ऐसे में खेती किसानों सबसे बड़ा संभावनाओं वाला क्षेत्र हो गया है। इसलिए अन्नदाता के सहयोग के लिए सभी नीति नियंताओं को मिलकर कार्ययोजना बनानी होगी ताकि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हो सके। खेती किसानों से अन्नदाता गौरवान्वित महसूस कर सके। इसलिए भले ही हम निर्यात में दस प्रमुख देशों में शुमार हो गए हों पर अभी रुकना नहीं आगे बढ़ना है और इसके लिए तात्कालीक प्रयासों के स्थान पर लंबी अवधि की योजना बनानी होगी।



ललित गर्ग

कान्चेंट से जुड़ीं और इसके बाद अध्यापन कार्य शुरू किया। उन्होंने 1946 में हुए सांप्रदायिक दंगे के दौरान अपने मन की आवाज पर लॉरेटो कान्चेंट की सुख सुविधा छोड़ बीमार, दुखियों और असहाय लोगों के बीच रह कर उनकी सेवा का संकल्प लिया। उन्होंने एक दशक तक कोलकाता के झुग्गी में रहने वाले लाखों दीन दुखियों की सेवा करने के बाद वही के धार्मिक स्थल काली बाई मंदिर में एक आश्रम की शुरुआत की। उस वक्त उनके पास सिर्फ पांच रुपये ही थे लेकिन उनका आत्मबल ही था जिससे उन्होंने 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की शुरुआत की और आज 133 देशों में इस संस्था का 4,501 सिस्टर मदर टेरेसा के बताए मार्ग का अनुसरण कर लोगों को अपनी सेवाएं दे रही हैं। मदर टेरेसा ने 'निर्मल हृदय' और 'निर्मला शिशु भवन' के नाम से आश्रम खोले। 'निर्मल हृदय' का ध्येय असाध्य बीमारी से पीड़ित रोगियों व गरीबों का सेवा करना था जिन्हें समाज ने तिरस्कृत कर दिया हो।

'निर्मला शिशु भवन' की स्थापना अनाथ और बेचर बच्चों की सहायता के लिए हुई। समाज के सबसे दलित और उपेक्षित लोगों के सिर पर अपना हाथ रख कर उन्होंने उन्हें मातृत्व का आभास कराया और न सिर्फ उनकी देखभाल की बल्कि उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए भी प्रयास शुरू किया। सच्ची लगन और मेहनत से किया गया काम सभी असफल नहीं होता, यह कहावत मदर टेरेसा के साथ सच साबित हुई। उनके आश्रम का दरवाजा हर वर्ग के लोगों के लिए हमेशा खुला रहता था। उन्होंने अपने कार्यक्रम के जरिए गरीब से गरीब और अमीर से अमीर लोगों के बीच भाईचारे और समानता का संदेश दिया था। उन्होंने किसी भी धर्म के लोगों के बीच कोई भेद नहीं किया। मदर टेरेसा ने भारत में कार्य करते हुए यहां की नागरिकता के साथ सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्राप्त (1980) किया। समाज में दिए गए उनके अद्वितीय योगदान की वजह से उन्हें पद्मश्री (1962), नोबेल

जानें दुखों को हरने वाले 'सिद्धिविनायक मंदिर' की महिमा

भगवान गणेश की मूर्ति में सूंड बायीं तरफ रहती है, लेकिन सिद्धिविनायक गणेश जी की मूर्ति में सूंड दाईं तरफ मुड़ी होती है। इस रूपा को सिद्धीपीठ माना जाता है और इस मंदिर को सिद्धिविनायक मंदिर कहा जाता है। देश के सबसे अमीर मंदिरों में अपना स्थान रखने वाले बप्पा का सबसे प्रसिद्ध सिद्धिविनायक मंदिर मुंबई में स्थित है। आप इस मंदिर की महिमा अलौकिक है और इसका अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि बप्पा के दर्शन के लिए इस मंदिर के बाहर घंटों लाइन लगा कर प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इस मंदिर की खूबसूरती अलौकिक है और इसकी बनावट भी आप का मन मोह लेती है। मंदिर के अंदर भगवान गणेश सिद्धिविनायक के रूप में विराजमान हैं तथा उनके अलग-बाल उनकी दोनों पत्नियों रिद्धि-सिद्धी की मूर्ति भी लगी हुई हैं। वहीं इस मंदिर की गर्भ गृह की छतें सोने की परतों से जड़ित हैं।

मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर का निर्माण 1801 ई. में बिट्टू और देऊ बाई पाटिल ने मिलकर कराया था। कहा जाता है कि बिट्टू एक ठेकेदार था जो गणपति भगवान के मंदिर का निर्माण करना चाहता था। वही उस इलाके में एक कृषक महिला

देऊ बाई पाटिल थीं, जो भगवान गणेश के मंदिर की निर्माण की इच्छा रखती थीं। जब महिला को पता चला कि ठेकेदार मंदिर का निर्माण करा रहा है तो उस महिला ने अपनी जिदगी भर की जमा पूंजी मंदिर निर्माण के लिए दान में दे दिया। कहा जाता है कि वह महिला निरन्तान थी और वह नहीं चाहती थी कि कोई भी औरत निरन्तान रहे, इसलिए उसने गणपति भगवान के मंदिर की कामना की ताकि सभी लोग आकर भगवान से स्तान प्राप्त का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। बताया जाता है कि शुरू में यह मंदिर बेहद छोटा बनाया गया था, लेकिन बाद में फिर इसका पुनर्निर्माण कर इसे काफी भव्य और विस्तृत किया गया। पुराणों में वर्णित है कि भगवान विष्णु जब सृष्टि की रचना कर रहे थे तो इस दौरान उन्हें नींद आ गई और भगवान विष्णु निद्रा में चले गए। तभी उनके दोनों कानों से मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस उत्पन्न हो गए और यह दोनों महाबली राक्षस देवताओं और ऋषि मुनियों पर अत्याचार कर उन्हें लगातार संघर्ष करने परेशान करने लगे। जब इन राक्षसों का अत्याचार दिन दूना और रात चौगुना की गति से बढ़ने लगा, तब देवता परेशान होकर भगवान विष्णु की शरण में गए और

इन दोनों राक्षसों के वध की कामना करने लगे। तब भगवान विष्णु निद्रा से जगे और इन राक्षसों का वध करने को उद्यत हुए, किन्तु वह ऐसा करने में असफल हुए। इसके बाद सभी देवता भगवान गणेश की शरण में गए और भगवान गणेश की सहायता से मधु और कैटभ नाम के राक्षसों का वध संभव हो सका। इसके बाद भगवान विष्णु ने एक पहाड़ी पर भगवान गणेश के मंदिर की स्थापना की जिसके बाद वह स्थान सिद्धिटेक और मंदिर को सिद्धिविनायक के नाम से जाना जाने लगा। सामान्यतः भगवान गणेश की मूर्ति में सूंड बायीं तरफ रहती है, लेकिन सिद्धिविनायक गणेश जी की मूर्ति में सूंड दाईं तरफ मुड़ी होती है। इस रूपा को सिद्धीपीठ माना जाता है और इस मंदिर को सिद्धिविनायक मंदिर कहा जाता है। कहा जाता है कि सिद्धिविनायक की महिमा अपरंपार है, वे भक्तों की मनोकामना को तुरंत पूरा करते हैं। वैसे तो मुंबई में मौसम सामान्यतया गर्म ही रहता है तो मानसून को छोड़ कर आप कभी भी दर्शन के लिए आ सकते हैं। सिद्धिविनायक मंदिर में हर मंगलवार को विशेष आरती होती है, जिसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं।

विश्व का संचालन लोकतांत्रिक ढंग से करने के लिए महिलाओं को देनी होगी पूरी आजादी

अंतर्राष्ट्रीय महिला समानता दिवस प्रत्येक वर्ष 26 अगस्त को मनाया जाता है। न्यूजीलैंड विश्व का पहला देश है, जिसने 1893 में महिला समानता की शुरुआत की थी। अमरीका में 26 अगस्त, 1920 को 19वें संविधान संशोधन के माध्यम से पहली बार महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इसके पहले वहाँ महिलाओं को द्वितीय श्रेणी नागरिक का दर्जा प्राप्त था। महिलाओं को समानता का दर्जा दिलाने के लिए लगातार संघर्ष करने वाली एक महिला वकील बेल्ला अब्जुग के प्रयास से 1971 से 26 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय महिला समानता दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। भारत में आजादी के बाद से ही महिलाओं को वोट देने का अधिकार प्राप्त तो था, लेकिन पंचायतों तथा नगर निकायों में चुनाव लड़ने का कानूनी अधिकार 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गाँधी के प्रयास से मिला। इसी का परिणाम है कि आज भारत की पंचायतों में महिलाओं की 50 प्रतिशत से अधिक भागीदारी है। लेकिन इन कुछ उपलब्धियों के बाद भी देखें तो आज भी महिलाओं की कामयाबी आधी-अधूरी समानता के कारण समान ही है। हर साल 26 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय महिला समानता दिवस तो मनाया जाता है लेकिन दूसरी ओर महिलाओं के साथ दायम दर्ज का व्यवहार अभी भी जारी है। हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और प्रतिशत कम है। दिल्ली महिला आयोग की सदस्य रूपिन्कर कौर कहती हैं, बदलाव तो अब काफी दिख रहा है। पहले जहां

महिलाएं घरों से नहीं निकलती थीं वहीं अब वे अपने हक की बात कर रही हैं। उन्हें अपने अधिकार पता हैं और इसके लिए वे लड़ाई भी लड़ रही हैं। अन्य देशों की भांति भारत में महिलाओं को समान अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा अर्थात् स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त हुए। भारतीय सविधान महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारों की गारंटी प्रदान करता है। यद्यपि वर्तमान समय में महिलाएं पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर प्रत्येक क्षेत्र में भाग ले रही हैं। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ महिलाओं ने अपनी योग्यता का परचम ना लहराया हो। शिक्षा, विज्ञान, खेल, प्रौद्योगिकी, व्यापार, मीडिया, मनोरंजन प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी देखने को मिलती है। इसके बावजूद भारत में महिलाओं की दयनीय दशा देखने को मिलती है। आप दिन महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटनायें सुनने में आती रहती हैं। महिलाओं के विरुद्ध कई प्रकार की हिंसाएँ देखने को मिलती हैं जैसे की हत्या, बलात्कार, छेड़छाड़, अपहरण, एसिड अटैक, दहेज हत्या, हानर किलिंग, जबरन गर्भपात, धुण हत्या इत्यादि। इस प्रकार यह स्पष्टता परिलक्षित होती है कि सर्वथा एक समानता दिवस के बावजूद भारत में महिलाओं को वास्तविक समानता अभी भी प्राप्त नहीं हो पाई है। भारत में बच्चों और महिलाओं के उचित विकास के लिये इस क्षेत्र में महिला और बाल विकास विभाग अच्छे से कार्य कर रहा है। विकास का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समर्थ बनाना

है क्योंकि एक सशक्त महिला अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के साथ ही देश का भविष्य का सुनिश्चित करती है। विकास की मुख्यधारा में महिलाओं को लाने के लिये भारत में महिलाओं को सदा से योगदानों को शुरू किया गया है। पूरे देश की जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी आधे की है और महिलाओं और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये हर क्षेत्र में इन्हें स्वतंत्रता की जरूरत है। सामाजिक विकास के क्षेत्र में महिलाओं के व्यक्तिगत योगदान को पहचान देने के लिए केंद्र सरकार ने स्त्री शक्ति के नाम से राष्ट्रीय पुरस्कारों की स्थापना की है। ये पुरस्कार भारतीय इतिहास को सम्मानित महिलाओं के नाम पर रखे गए हैं, जो अपने साहस और एकता के लिए विख्यात हैं, जैसे- देवी अहिल्याबाई होकर, कन्नगी, माता जीजाबाई, रानी गिडेनेलु जिलायंग तथा रानी लक्ष्मीबाई। भारत सरकार की बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ योजना भी समानता की दिशा में अच्छा कार्य कर रही है। महिला जनप्रतिनिधिओं को प्रशिक्षण देने के लिए सरकार ने सहायनीय कदम उठाये हैं। महिलाओं को कानूनी संरक्षण देने के लिए कड़े कानून बनाये गये हैं। विश्व की अनेक महिलाओं ने महिला जागरूकता तथा महिला समानता की दिशा में अनुकरणीय कार्य किये हैं। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित सुन्री वंगारी मथाई केन्याई पर्यावरणविद् और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं। यह महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाली महान महिला के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने अमेरिका और कीनिया में उच्च शिक्षा अर्जित की। 1970 के दशक में



26 अगस्त की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- | | |
|------|---|
| 1303 | अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़गढ़ पर क़ब्ज़ा किया |
| 1910 | नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित मदर टेरेसा का युगोस्लाविया में जन्म |
| 1914 | बंगाल के क्रांतिकारियों ने कलकत्ता में ब्रिटिश बेड़े पर हमला कर 50 माउजर और 46 हजार राउंड गोलियाँ लूटी। |
| 1920 | अमेरिका में महिलाओं को मताधिकार मिला। |
| 1977 | जर्मनी के म्यूनिख शहर में 20वें ऑलंपिक खेलों की शुरुआत। |
| 1982 | नासा ने टेलीसेट-एफ का प्रक्षेपण किया। |
| 2001 | बांग्लादेश के पूर्व प्रधानमंत्री जेल भेजे गए। |
| 2002 | दक्षिण अफ़्रीका के जोहानिसबर्ग शहर में दस दिवसीय पृथ्वी सम्मेलन शुरू। |
| 2007 | पाक-अफ़ग़ान सीमा पर अमेरिकी नेतृत्व वाली सेना ने 12 तालिबानियों को मार गिराया। |
| 2008 | तेलगु फिल्मों के सुपर स्टार चिरंजीवी ने अपनी नई पार्टी प्रजा राज्यम का उद्घाटन किया। |
| 2013 | फिलीपीन्स में विकास सहायता कोष घोषाले को लेकर विरोध प्रदर्शन। |
| 2015 | अमेरिका के वर्जीनिया में दो पत्रकारों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। |
| 1972 | इंद्र कुमार - भारतीय हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध सहायक अभिनेताओं में से एक थे। |

मथाई ने ग्रीन बेल्ट आंदोलन नामक गैर सरकारी संगठन की नींव डालकर पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण और महिलाओं के अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया। 2004 में लोक कल्याण के सतर कार्यों की वजह से वह नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली अफ़्रीका महिला और पहली पर्यावरणविद् बनी। मेधा पाटकर एक भारतीय पर्यावरणविद्, सामाजिक कार्यकर्ता तथा समाज सुधारक हैं। मेधा पाटकर नर्मद्य बचाओ आंदोलन की संस्थापक के नाम से भी जानी जाती है। नर्मदा नदी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा गुजरात में से बहकर अरबिअन समुद्र तक पहुँचती है। इस नदी पर काफी सारे छोटे बांध एवं सरदार सरोवर बांध को बनाने की अनुमति सरकार ने दी थी। इस कारण से हजारों आदिवासियों तथा किसानों का भी नुकसान हो रहा था। आदिवासियों का विस्थापन हो रहा था और उसके लिये उन्हें मुआवजा भी नहीं दिया जा रहा था। पाटकर उन लोगों में से एक थी जिसने इस अन्याय के खिलाफ लम्बी लड़ाई लड़ी थी। सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्ध पर्यावरणविद् है। सुनीता नारायण सन 1982 से विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र से जुड़ी हैं। वर्तमान में वह केंद्र की निदेशक हैं। वे पर्यावरण संरक्षण समाज की निदेशक भी हैं। वे डाउन टू अर्थ नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका की प्रकाशित करती हैं जो पर्यावरण पर केंद्रित है। वे हरित राजनीति और अक्षय विकास की महान समर्थक हैं। सन 2005 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से अनकृत किया।

मधुमेह रोगियों को लेना चाहिए योग का सहारा



पश्चिमोत्तानासन- इस आसन से शरीर का पाचनत्रंज मजबूत होता है और शरीर में रक्त का संचार तेजी से होता है, जिससे व्यक्ति को डायबिटीज से लड़ने में आसानी होती है। यह आसन करने के लिए पैर सीधे फैलाकर बैठ जाएं। फिर दोनों हाथों को ऊपर उठाएं और सांस भरते हुए पैरों के तलवे को पकड़ने की कोशिश करें। घुटने से माथा सटना चाहिए। फिर सांस छोड़ते हुए हाथ ऊपर करके सामान्य हो जाएं। इस प्रक्रिया को दो से तीन बार दोहराएं।

सर्वांगासन: यह शरीर का संपूर्ण व्यायाम है। इसे करने से थायरॉइड और पैराथायराइड ग्रंथियों को मजबूती मिलती है। इसे करने के पहले सीधे लेट जाएं, फिर पैरों को धीरे-धीरे उठाते हुए 90 डिग्री का कोण बनाएं। हाथों से कमर को सहारा दें। इस आसन में शरीर का सारा भार गर्दन पर पड़ना चाहिए। पैरों को सीधा रखें।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन: यह आसन यकृत व मूत्राशय को सक्रिय बनाता है। जिन लोगों के शरीर के भीतर इंसुलिन का उत्पादन नहीं होता या जिन्हें मधुमेह की बीमारी होती है, यह अभ्यास उनके शरीर में अग्नाशय को सक्रिय बनाकर इंसुलिन के उत्पादन में सहयोग देता है, इसलिए यह मधुमेह के उपचार के लिए रामबाण दवा है। इस आसन को करने के लिए सबसे पहले सामने की ओर दोनों पैरों को फैलाकर बैठ जाएं। अब दाहिने पैर को मोड़ते हुए बाएं घुटने के बगल में बाहर की ओर रखें। इसके बाद बाएं को दाहिने ओर मोड़िए। एड़ी दाहिने नितम्ब के पास रखें। बाएं हाथ को दाहिने पैर के बाहर की ओर रखते हुए दाहिने पैर के टखने या अंगूठे को पकड़ें। दाहिना हाथ पीछे की ओर कमर में लपेटते हुए शरीर को दाहिनी ओर मोड़ें। अंतिम अवस्था में पीठ को अधिक से अधिक मोड़ने की कोशिश करें। एक मिनट इस अवस्था में रूकने के बाद धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में आ जाएं। अब इसी क्रिया को

विपरीत दिशा में करें। गर्भावस्था के दौरान व हथ रोगियों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

प्राणायाम: प्राणायाम मधुमेह के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। खासतौर से, भ्रामरी और भ्रमिका प्राणायाम तो डायबिटिक लोगों को जरूर करना चाहिए। इनके नियमित अभ्यास से स्ट्रेस लेवल कम होता है और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। भ्रामरी प्राणायाम करने के लिए पद्मासन में बैठ जाएं। अंगूठे से कान बंद करें और ऊपर की तीन उंगलियों को आंखों पर रखें। अब गहरी सांस लेते हुए गले से उच्चारण करें। भ्रमिका प्राणायाम के लिए पद्मासन में बैठ जाएं। गहरी सांस लें और उसे जल्दी जल्दी छोड़ें। इस प्रक्रिया में मुंह बंद रखें और सांस की सारी प्रक्रिया नाक से ही करें।

सूर्य नमस्कार: अगर आपके पास सभी आसनों को करने का पूरा समय नहीं है तो रोज दो से तीन बार सूर्य नमस्कार अवश्य करें। सिर्फ इस आसन को करने से भी आप काफी हद तक इस रोग को नियंत्रित कर सकेंगे। इससे श्वास, पेट और प्रतिरोधी क्षमता को लाभ पहुंचता है।

इन बातों का रखें ख्याल

अगर आप योग द्वारा मधुमेह का उपचार कर रही हैं तो कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखें। सर्वप्रथम हमेशा खाली पेट ही योग क्रिया करें। साथ ही ढीले, हल्के व आरामदायक वस्त्र पहनकर ही योग करें। ऐसा जरूरी नहीं है कि आप सभी योगासन करें लेकिन जो भी करें, उसे सही ढंग से करें। साथ ही इसे चंद दिनों की चांदनी न बनाएं बल्कि जीवपर्यन्त हमेशा करने की आदत डालिए। योगासन के अतिरिक्त अगर संभव हो तो सप्ताह में एक दिन नेती क्रिया या कुंजल क्रिया अवश्य करें। इन क्रियाओं को शुरूआत में किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में ही करें।

हेल्थ संवाददाता

भारत में आज लगभग हर घर में आपको कोई न कोई मधुमेह का रोगी मिल ही जाएगा। जैसे तो आमतौर पर लोग इस बीमारी को कोई खास तवज्जो नहीं देते लेकिन एक बार इस बीमारी की जद में आ जाने के बाद इससे छुटकारा पाना बेहद मुश्किल हो जाता है। साथ ही यह एक ऐसी बीमारी है कि जिसके बाद मनुष्य को बहुत सी चीजों से किनारा करना पड़ता है। इतना ही नहीं,

कुछ समय पहले तक जहां यह एक उम्र के बाद ही लोगों को अपनी चपेट में लेता था, वहीं गलत खान-पान व जीवनशैली के कारण वर्तमान में कम उम्र के लोग भी इससे पीड़ित हो रहे हैं। ऐसे में यह बेहद आवश्यक है कि कुछ ऐसे उपाय किए जाएं, जिससे आपका शुगर कंट्रोल में रहे। मधुमेह को नियंत्रित रखने में योग आपके काफी काम आ सकता है। तो आईए जानते हैं मधुमेह को कंट्रोल करने वाले कुछ योगासनों के बारे में-

‘पपीते का रस वाकई है डेंगी की कारगर दवा’



डेंगी के मरीजों को पपीते के पत्ते से फायदा होता है या नहीं अभी इस पर सवालिया निशान हैं, लेकिन श्रीलंकाई वैज्ञानिकों की रिसर्च को ब्रिटिश मेडिकल जर्नल ने पब्लिश कर इसके यूज करने के तरीके पर गाइडलाइन जारी की है। जर्नल की इस स्टडी के अनुसार, पपीते के पत्ते

से डेंगी के मरीजों में बुखार के पहले दिन से ही फायदा होता है। साथ ही, यह भी कहा गया है कि अभी तक जितनी भी स्टडी हुई है, किसी में इसके साइड इफेक्ट की बात सामने नहीं आई है। लेकिन, अभी तक न तो डब्ल्यूएचओ ने इसे रिकमंड किया है और न ही नेशनल गाइडलाइन में इसे शामिल किया गया है। इस रिसर्च पेपर का हवाला देते हुए गंगाराम अस्पताल के डॉक्टर प्रत्युष कुमार ने कहा कि पपीते के पत्ते के कई फायदे बताए गए हैं, जैसे- यह डेंगी फीवर के ड्यूरेशन को कम करता है, अस्पताल में मरीज के ठहराव को कम करता है, बॉडी से फ्ल्यूड लीक नहीं होने देता और वाइट ब्लड सेल्स और प्लेटलेट्स की संख्या को बढ़ाता है। डॉक्टर ने बताया कि इस स्टडी में यह भी कहा गया है कि बुखार कन्फर्म होने के पहले दिन से ही पपीते के पत्ते का रस दिया जा सकता है। हालांकि, यह रस कभी भी इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि अभी तक इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं देखा गया है। रिसर्च पेपर में कहा गया है कि अगर किसी को डेंगी पकड़ में आया है तो उसे तुरंत एंटीबैयोटिक डॉक्टर से इलाज शुरू कराना चाहिए और पपीते के पत्ते का इस्तेमाल अलग से डेंगी मैनेजमेंट के लिए किया जा सकता है। पत्ते का जूस कभी भी किसी भी स्टेज में दिया जा सकता है। लेकिन, बुखार आने के पहले दिन से देने पर इसका फायदा बहुत ज्यादा होता है। इसमें कहा गया है कि यह जूस एक अडल्ट को 30 एमएल दिन में तीन बार दिया जाना चाहिए और बच्चों को 5 से 10 एमएल दिन में तीन बार दें। हालांकि इसमें यह भी कहा गया है कि जूस पीने के बाद एक घूंट पानी पी सकते हैं, ताकि इसका कड़वा टेस्ट खत्म हो जाए।

ऐसे तैयार करें पपीते का जूस

इस गाइडलाइन में जूस बनाने का तरीका भी बताया गया है। इसके मुताबिक सबसे पहले हेल्दी और फ्रेश पपीते के पत्ते को लें। इसे अच्छी तरह से धो लें और चॉप कर दें, इसके बाद 50 ग्राम पत्ते लें, इसमें 50 एमएल पानी (पानी गर्म करके ठंडा कर लें) और 25 ग्राम चीनी मिलाएं। इसे 15 मिनट तक मिक्स करें। मिक्स होने के बाद इसे 30 मिनट तक छोड़ दें, इसके बाद इससे जूस निकाल लें। जूस निकालने के लिए हाथों का ही यूज करें। इसके बाद यह जूस डेंगू मरीज को पिलाएं। एक बार तैयार किए गए जूस को 24 घंटे तक फ्रिज में रख सकते हैं।

दिव्य औषधीय गुणों से भरपूर है करेला

हेल्थ संवाददाता

लेटिन में मॉर्डिका तथा अंग्रेजी में बिटर गॉर्ड के नाम से पुकारा जाने वाला करेला बेल पर लगने वाली सब्जी है। इसका रंग हरा होता है इसकी सतह पर उमरे हुए दाने होते हैं। इसके अंदर बीज होते हैं। यह अपने स्वाद के कारण काफी प्रसिद्ध है। इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए प्रायः कड़वे (बुरे) स्वभाव वाले व्यक्ति की तुलना करेले से कर दी जाती है। एक अच्छी सब्जी होने के साथ-साथ करेले में दिव्य औषधीय गुण भी होते हैं। यह दो प्रकार का होता है बड़ा तथा छोटा करेला। बड़ा करेला गर्मियों के मौसम में पैदा होता है जबकि छोटा करेला बरसात के मौसम में। चूँकि इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए अधिकांश लोग इसकी सब्जी को पसंद नहीं करते। इसके कड़वेपन को दूर करने के लिए इसे नमक लगाकर कुछ समय तक रखा जाता है।



गर्मियों के लिए अच्छा है करेला
नमी अधिक तथा बसा कम मात्रा में होने के कारण यह गर्मियों के लिए बहुत अच्छा है। इसके प्रयोग से त्वचा साफ होती है और किसी प्रकार के फोड़े-फुन्सी नहीं होते। यह भूख बढ़ाता है, मल को शरीर से बाहर निकालता है। मूत्र मार्ग को भी यह साफ रखता है। इसमें विटामिन ए अधिक होने के कारण यह आंखों की रोशनी के लिए बहुत अच्छा होता है। रतौंधी होने पर इसके पत्तों के रस का लेप थोड़ी-सी काली मिर्च मिलाकर लगाया चाहिए। इस रोग के कारण रोगी को रात में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। विटामिन सी की अधिकता के कारण यह शरीर में नमी बनाए रखता है और बुखार होने की स्थिति में बहुत लाभकारी होता है। करेले की सब्जी खाने से कभी कब्ज नहीं होती यदि किसी व्यक्ति को पहले से कब्ज हो तो वह भी दूर ही जाती है। इससे एसीडिटी, इसका छाती में जलन और खट्टी डकारों की शिकायत भी दूर हो जाती है।

करेला में पोषक तत्व
करेले की तासीर ठंडी होती है। यह पचने में हल्का होता है। यह शरीर में वायु को बढ़ाकर पाचन क्रिया को प्रदीप्त कर, पेट साफ करता है। प्रति 100 ग्राम करेले में लगभग 92 ग्राम नमी होती है। साथ ही इसमें लगभग 4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.5 ग्राम प्रोटीन, 20 मिलीग्राम कैल्शियम, 70 मिलीग्राम फास्फोरस, 1.8 मिलीग्राम आयरन तथा बहुत थोड़ी मात्रा में वसा भी होता है। इसमें विटामिन ए तथा विटामिन सी भी होता है जिनकी मात्रा प्रति 100 ग्राम में क्रमशः 126 मिलीग्राम तथा 88 मिलीग्राम होती है।

बुखार में कारगर है करेला

बड़े हुए यकृत, प्लीहा तथा मलेरिया बुखार में यह बहुत फायदेमंद सिद्ध होता है। इसके लिए रोगी को करेले के पत्तों या कच्चे करेले को पीसकर पानी में मिलाकर पिलाया जाता है। यह इस दिन में कम से कम तीन बार पिलाना चाहिए। कच्चा करेला पीसकर पिलाने से पीलिया भी ठीक हो जाता है। रस निकालने से पहले पत्तों या करेले को ठीक से राइडकर धोना जरूरी होता है क्योंकि आजकल फल सब्जियों को रोगों तथा कीड़ों से बचाने के लिए अनेक रसायन छिड़के जाते हैं जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। जोड़ों के दर्द तथा गठिया रोग में करेले की सब्जी बिना कड़ुवापन दूर किए दिन में तीनों समय अर्थात् सुबह नाशते में और फिर दोपहर तथा रात्रि के भोजन में खाई जानी चाहिए। फोड़े-फुन्सी तथा रक्त विकार में करेले का रस

लाभकारी होता है। इन पर करेले के पत्तों का लेप भी किया जा सकता है। करेले का रस निकालते समय यह ध्यान रखें कि यह बहुत ज्यादा पतला न हो और उसे साफ बर्तन में निकाला जाए।

कुष्ठरोग में करेला है रामबाण

त्वचीय रोग, कुष्ठ रोग तथा बवासीर में करेले को मिक्सी में पीसकर प्रभावित स्थान पर हल्के-हल्के हाथों से लेप लगाया चाहिए। यह लेप नियमित रूप से रात को सोने से पहले लगाएं। जब तक इच्छित लाभ न हो लेप लगाया जारी रखना चाहिए। करेले के रस की एक चम्मच मात्रा में शकर मिलाकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। यह शरीर में उत्पन्न टॉक्सिन्स तथा उपस्थित अनावश्यक वसा को दूर करता है अतः यह मोटापा दूर करने में भी विशेष रूप से सहायक होता है। जिस स्त्री को मासिक स्राव बहुत कठिन तथा दर्द भरा हो तो उसे भी करेले के रस का सेवन करना चाहिए। इसका सेवन गर्भवती स्त्रियों में दूध की मात्रा भी बढ़ाता है।

आयुर्वेद में हैं स्मरण शक्ति बढ़ाने वाली कई जड़ी बूटियाँ

स्मरण शक्ति का हमारे जीवन में क्या महत्व है इससे हम सभी परिचित हैं। दरअसल स्मरण शक्ति ही हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है। अच्छी स्मरण शक्ति जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होती है। रोजमर्रा के जीवन में भी अनेक कार्य ऐसे होते हैं जो हम अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर ही करते हैं। यदि यही स्मरण शक्ति क्षीण हो जाए तो निश्चय ही हम स्वयं को असहाय स्थिति में पाएंगे। तनाव एक ऐसा कारक है जो स्मरण शक्ति को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रायः तनावग्रस्त व्यक्ति ही तथ्यों को ठीक से याद नहीं रख पाते इसके अतिरिक्त गहरी दिमागी चोट, कोई घातक रोग या किसी शोक में पड़ने के कारण भी स्मरण शक्ति कमजोर पड़ जाती है। नशीले पदार्थों का ज्यादा मात्रा में लगातार सेवन करने से भी स्मरण शक्ति क्षीण होने लगती है। स्मरण शक्ति का प्रभाव उम्र से भी संबंधित होता है किशोरावस्था तथा नौजवानी में स्मरण शक्ति तेज होती है। बढ़ती उम्र के साथ-साथ स्मरण शक्ति भी घटती जाती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के लिए अच्छी स्मरण शक्ति का खासा महत्व है इसलिए अच्छी स्मरण शक्ति की नींव बचपन से ही डाली जानी चाहिए। यदि बचपन से ही इस बात का ख्याल रखा जाए कि बच्चे की स्मरण शक्ति तेज हो तो आगे चलकर वह कुशाग्र बुद्धि वाला बनता है। आयुर्वेद में अनेक ऐसी जड़ी-बूटियाँ हैं जिनका प्रयोग स्मरण शक्ति को तेज करने के लिए प्राचीन काल से ही किया जा रहा है। एक से तीन वर्ष तक के बच्चों को ब्राह्मी तथा शंखपुष्पी का शरबत नियमित रूप से देना चाहिए। इनके प्रयोग से बच्चे हट्ट-पुष्ट तथा कुशाग्र बुद्धि वाले बनते हैं। इसके अतिरिक्त बेल का शरबत भी मस्तिष्क को पुष्ट करता है। ब्राह्मी का शरबत बनाने के लिए 50 ग्राम ब्राह्मी के पत्ते लेकर कैंची से काटकर साफ कर लें बाद में उसे पीस कर उबालें जब तक कि अधिकांश पानी वाष्पित न हो जाए। जब यह पानी केवल 250 ग्राम रह जाए तो उसमें लगभग 500 ग्राम चीनी डालकर दो तार की चाशनी होने तक पका लें। इसी प्रकार शंखपुष्पी का शरबत भी बनाया जा सकता है। शंखपुष्पी के फूल बाजार में आसानी से मिल जाते हैं। देखने में ये शंख जैसे लगते हैं। तीन वर्ष तक के बच्चों को इस शरबत की एक चम्मच मात्रा सुबह और इतनी ही मात्रा शाम को दी जा सकती है। इससे बच्चों के व्यक्तित्व का समग्र विकास होता है। आंवले, गाजर तथा सेब के मुरब्बे को एक साथ मिक्सी में पीसकर चटनी बना लें। बाद में इस चटनी में 5-5 ग्राम ब्राह्मी, शंखपुष्पी तथा जटामांसी का चूर्ण मिला लें। लगभग 10 ग्राम छोटी इलायची भी पीस कर इसमें मिला लें। इस चटनी को किसी साफ-सुधरे मर्तबान में संग्रहित कर लें। तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को यह चटनी दिन में तीन बार सुबह, दोपहर तथा शाम को आधी से एक चम्मच दें। इससे बच्चों की स्मरण शक्ति बढ़ती है। आठ से बीस वर्ष तक के बच्चों को एक अवलेह दिया जा सकता है। जिससे स्मरण शक्ति तेज होती है। इस अवलेह को बनाने के लिए कागजी बादाम की गिरी, अखरोट की गिरी, कच्चे चिलगोजे की 100-100 ग्राम मात्रा तथा 100 ग्राम चारों मगज (खरबूजा, तरबूज, खीरा तथा घीया) को मिलाकर आंवले का पिसा हुआ मुरब्बा मिला लें। बाद में इस मिश्रण में ब्राह्मी शंख पुष्पी तथा जटामांसी का 10-10 ग्राम चूर्ण तथा छोटी इलायची की 20 ग्राम चूर्ण मिला लें। इस अवलेह को साफ मर्तबान में भरकर रखें। इस मिश्रण की एक-एक चम्मच मात्रा सुबह-शाम लें। इसे गुनगुने दूध के साथ ही लिया जा सकता है। इसके सेवन से स्मरण शक्ति तो दुरुस्त रहती है साथ ही यह हृदय, नेत्र तथा दांतों को भी पुष्ट करता है। बच्चों को भोजन के बाद मौसम के अनुसार यदि गाजर, घीया या फूल मखाने की खीर दी जाए तो इससे भी शरीर एवं मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। कमलगट्टे के हलुए का सेवन सभी उम्र के लोग कर सकते हैं। मस्तिष्क के लिए यह अमृत के समान होता है। इसे बनाने के लिए कमलगट्टे के बीज निकालकर उसका छिलका उतार लें। इसका हरा भाग हटा दें। इसे पीसकर शुद्ध घी में गुलाबी होने तक भून लें बाद में इसमें चीनी तथा पिप्पी इलायची मिला लें। यह हलुआ शरीर को निरोग बनाए रखने में भी मदद देता है।

प्रभास की 350 करोड़ में बनने वाली फिल्म फौजी

मुंबई। प्रभास की 'कलिक' इतिहास रचते हुए बॉक्स ऑफिस पर 1000 करोड़ कमाने वाली कुछ चुनिंदा इंडियन फिल्मों में शुमार हो गई। अब प्रभास अपनी नई पीरियड एक्शन ड्रामा फिल्म को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। हाल ही में हैदराबाद में इस फिल्म की पूजा संरेमनी रखी गई। इसकी शूटिंग जल्द ही शुरू हो सकती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक,

प्रभास की आने वाली फिल्म का नाम 'फौजी' हो सकता है। 350 करोड़ के बजट के साथ ये एक ग्रैंड फिल्म बनने जा रही है। लीडिंग लेडी को लेकर ऐसे भी कयास लगाए जा रहे हैं कि इसमें एक पाकिस्तानी एक्ट्रेस की भी एंट्री हो सकती है। इनके अलावा, मिथुन चक्रवर्ती और जया प्रदा भी इस फिल्म में अहम किरदार निभाते नजर आएंगे।

हॉलीवुड मसाला

फिर भारत आने वाली हैं पाप स्टार

मुंबई। मशहूर पाप सिंगर दुआ लोपा एक बार फिर भारत आने वाली हैं। इससे पहले वो दिसंबर 2023 में आई थीं। दुआ जोमेटो के फॉडिंग इंडिया कॉन्सर्ट में परफॉर्म करने के लिए आ रही हैं। 28 साल की उम्र ने दुआ ने दुनियाभर में एक अलग पहचान बना ली है। यह कॉन्सर्ट 30 नवंबर को मुंबई के बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के एमएआरडीए वाउड में होगा। कॉन्सर्ट के लिए पी-सेल टिकट 27 अगस्त की दोपहर से 29 अगस्त तक उपलब्ध रहेंगे।



लाइफ Style

उफ़ी

करोड़ों की मालकिन, लगजरी लाइफ

एजेसी ►► मुंबई

उफ़ी जावेद की पहचान से हर कोई वाकिफ है। सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस खूब एक्टिव रहती हैं। छोटे पर्दे से अपना करियर शुरू करने वाली उफ़ी जावेद ने आज भले ही अपना मुकाम हासिल कर लिया है, लेकिन एक समय ऐसा था जब वह बेकअप के दर्द में सुसाइड भी करना चाहती थी।

आज उफ़ी काफी लगजरी लाइफ जीती हैं। आपको बता दें कि उफ़ी जावेद को रोजाना की कमाई लाखों में होती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उफ़ी जावेद का कमाई का सबसे बड़ा सोर्स सोशल मीडिया ही है। मिलियन में फॉलो करने वाले लोगों ने ही उफ़ी को पापुलर इन्फ्लुएंसर बनाया है। जिस वजह से उनके साथ कई बड़े ब्रांड कोलॉब करते हैं। ब्रांड कोलॉब के साथ उफ़ी को मोटी कमाई होती है। इसके अलावा उफ़ी जावेद रियलिटी शो और गेस्ट अभियंत्रित्स के जरिए भी खूब पैसा कमाती हैं। जानकारी के अनुसार उफ़ी महीने में करीब 2 करोड़ के आसपास कमाती हैं। साथ ही उफ़ी की नेटवर्थ 172 करोड़ बताई जाती है। यूपी के लखनऊ से ताल्लुक रखने वाली उफ़ी जावेद का जन्म 15 अक्टूबर 1996 को हुआ। उन्होंने अपनी पढ़ाई वहीं से पूरी की। इंस्टाग्राम पर लोग उफ़ी के दीवाने हैं, जिसका सबूत उनके 4.9 फॉलोअर्स हैं। फैंस उनकी फोटोज, रील्स खूब पसंद करते हैं। 'बड़े भैया की दुल्हनिया', 'मेरी दुगा', 'टेढ़ी मेढ़ी फैमिली' जैसे सीरियल्स में नजर आ चुकीं उफ़ी एक्टिंग में भी अपना जलवा दिखा चुकीं हैं। उफ़ी ने भले ही टीवी इंडस्ट्री में कई सीरियल में काम किया है।

जिस घर में हुई शादी उसी को बेच रहीं

मुंबई। सोनाक्षी सिन्हा इन दिनों काफी सुर्खियों में छाई हुई हैं। खबरें हैं कि एक्ट्रेस अपने मुंबई के आलीशान घर को बेच रही हैं। गौरतलब है कि एक्ट्रेस ने बांद्रा वेस्ट में स्थित अपने इसी घर में 23 जून को अपने लव ऑफ लाइफ जहीर इकबाल से शादी भी की थी। वहीं शादी के कुछ दिनों बाद ही सोनाक्षी के अपने घर को बेचने की खबरों ने सभी को हैरान कर दिया है और हर कोई इसकी वजह जानना चाहता है। वहीं रिपोर्ट के मुताबिक सोनाक्षी के एक करीबी सूत्र ने एक्ट्रेस के अपना घर बेचने की वजह का खुलासा किया है। सूत्र ने बताया सोनाक्षी ने उसी बिल्डिंग में एक बड़ा अपार्टमेंट खरीदा है जिसे जहीर डेवलेप कर रहे हैं। बता दें कि सोनाक्षी के मिस्टर हसबैंड जहीर इकबाल ने 'द नोटबुक; (2019) से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की।



टकराएंगी नानी और थलपति की फिल्मों

मुंबई। साउथ इंडियन सिनेमा के दो बड़े सुपरस्टार नानी और थलपति विजय की फिल्में जल्द ही रिलीज होने वाली हैं। आने वाले दो हफ्तों में टॉलीवुड के स्टार नानी की 'सारिपोधा सानिवारम' और कॉलीवुड के स्टार थलपति विजय की 'द गोत' अलग-अलग दिन थिएटर में रिलीज होंगी। दोनों फिल्मों को कई भाषाओं में रिलीज किया जाएगा। 'सारिपोधा सानिवारम' को विवेक अथरैया ने डायरेक्ट किया है, जो कि 29 अगस्त को सिनेमाघरों में आएगी। ठीक उससे एक हफ्ते बाद यानी 5 सितंबर को वेंकट प्रभु के डायरेक्शन में बनी 'द गोत' रिलीज होगी। दिलचस्प बात सामने आई है कि दोनों ही फिल्मों का रनटाइम लगभग 3 घंटे होगा। जिसमें से 'द गोत' का रनटाइम 2 घंटे और 59 मिनट है, वहीं 'सारिपोधा सानिवारम' का रनटाइम 2 घंटे और 50 मिनट होगा।

जेनिफर ने बिना वकील के अपना तलाक किया फाइल

लॉस एंजिल्स। जेनिफर लोपेज और बेन एफ्लेक हॉलीवुड की मशहूर जोड़ियों में से एक हैं। हालांकि दोनों अब अलग होने जा रहे हैं। जेनिफर लोपेज ने बेन एफ्लेक से अलग होने के लिए बिना वकील किए तलाक की अर्जी दे दी है। जेनिफर ने अपनी सेकंड एनिवर्सरी में ये अर्जी दायर की है। दोनों लंबे वक्त से एक दूसरे से अलग होने की खबरों को लेकर चर्चा में थे। इतिहासकारों के रिलेशनशिप एक्सपर्ट जो और चेरिल ने इंटरव्यू में कहा कि यूनाइटेड स्टेट्स में तलाक के लिए वकील की जरूरत नहीं होती है। जेनिफर और बेन ने दो साल पहले 2022 में शादी कर ली थी। ऐसा कहा जाता है, दोनों ने दो बार शादी की है। रिपोर्ट के मुताबिक उनकी पहली शादी जुलाई 2022 में लॉस वेगास में हुई थी।

टीवी मसाला



शिवानी से लेकर पुनीत सुपरस्टार तक, ये सेलिब्रिटी बन सकते हैं कंगना के शो का हिस्सा

मुंबई। कंगना रनौत इमरजेंसी से थिएटर में कामबंद करने जा रही हैं और साथ ही कहा जा रहा है कि एकता कपूर के रियलिटी शो 'लॉकअप' का दूसरा सीजन भी वो होस्ट करने जा रही हैं। जी हां, सलमान खान के 'बिग बॉस 18' के साथ कंगना का 'लॉकअप 2' भी टीवी और ओटीटी पर दस्तक देने जा रहा है। शिवानी कुमार से लेकर पुनीत सुपरस्टार तक अब तक कई सेलिब्रिटीज से इस शो में शामिल होने के लिए संपर्क किया गया है। आइए एक नजर डालते हैं उन बड़े नामों पर जो 5 अक्टूबर से शुरू होने वाले इस शो का हिस्सा बन सकते हैं। लॉकअप 2 में शामिल होने वाले कंटेस्टेंट में कृष्णा अभिषेक का नाम चर्चा में है। कृष्णा के साथ-साथ बिग बॉस ओटीटी के घर से निकलकर हुए पुनीत सुपरस्टार इस विवादित शो में नजर आ सकते हैं। बिग बॉस 17 के तहलका भाई (सनी आर्या) की बीवी दीपिका आर्या और डॉली चायवाला को भी कंगना रनौत के शो में शामिल होने का ऑफर दिया गया है। इन सेलिब्रिटीज के अलावा बिग बॉस ओटीटी के सीजन 3 का हिस्सा रही शिवानी कुमार, सौंदर्या शर्मा, रैपर एमीवे बंद्यो, आसिम रियाज के भाई डॉक्टर उमर रियाज और मैक्सवर्न भी इस शो में अपना कमाल दिखा सकते हैं।

ये सेलिब्रिटी हो चुकीं हैं शो में शामिल

कंगना रनौत और एकता कपूर के रियलिटी शो 'लॉकअप' को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। इस शो में मुनव्वर फारूकी, पूनम पांडे, अंजलि अरोड़ा, पायल रोहतगी के साथ कई मशहूर सेलिब्रिटी बतौर कंटेस्टेंट शामिल हुए थे। अब इस शो के सीजन 2 में भी एक से बढ़कर एक सेलिब्रिटी हिस्सा लेगी।

कंगना ही करेगी होस्ट

हाल ही में एकता कपूर ने ऑडियंस के साथ ये खुशखबरी शेयर की थी कि वो जल्द अपने रियलिटी शो 'लॉकअप 2' का दूसरा सीजन लॉन्च करने जा रही हैं। उनकी इस घोषणा के बाद ये तय हो गया था कि कंगना ही इस शो का दूसरा सीजन होस्ट करने जा रही हैं। हालांकि कंगना की तरफ से इस बात को लेकर कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है लेकिन सूत्रों के मुताबिक वही इस शो का चेहरा बनने वाली हैं।

इस खूबसूरत मुस्लिम एक्ट्रेस ने की थी सात साल छोटे हिंदू एक्टर से शादी...

मुंबई। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कई हिंदू हसीनाओं ने मुस्लिम एक्टरों से शादी की है। वहीं कई मुस्लिम हसीनाओं का दिल हिंदू एक्टरों पर आया। हिंदू एक्टरों से कई हसीनाएं शादी कर चुकीं हैं और अब वे खुशहाल लाइफ जी रही हैं। आज हम आपको एक ऐसी ही अभिनेत्री के बारे में बता



रहे हैं जिसने मुस्लिम होते हुए दूसरे धर्म में शादी की थी और वो भी अपने से सात साल छोटे अभिनेता थे। ये एक्ट्रेस कभी अपनी खूबसूरती और एक्टिंग के लिए चर्चा में थीं। बाद में इस एक्ट्रेस के पति पर रेप का केस भी दर्ज हुआ था। वहीं इसने अपनी पर्सनल लाइफ से भी खूब सुर्खियां बटोरीं।

1976 की फिल्म 'चितचोर' में किया काम : जिस हसीना के बारे में जानने के लिए आप एक्साइटेड हैं उनका नाम है जरीना वहाब। मुस्लिम धर्म से ताल्लुक रखने वाली जरीना वहाब का जन्म 18 जुलाई 1959 को विशाखापट्टनम में हुआ था। उन्होंने साल 1976 की फिल्म 'चितचोर' में काम किया था। इसके बाद वे 'घरोंदा' और 'हम किसी से कम नहीं' जैसी फिल्मों में भी नजर आईं। अपने करियर में एक्ट्रेस ने कई हिंदी फिल्मों के अलावा साउथ सिनेमा में भी काम किया।

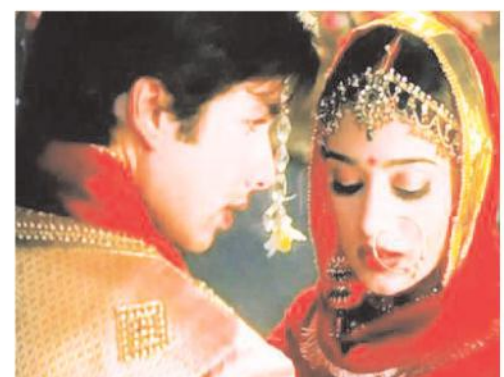
1986 में हिंदू एक्टर आदित्य पंचोली से की थी शादी : बॉलीवुड में काम करने के दौरान जरीना वहाब जाने-माने एक्टर आदित्य पंचोली पर दिल हार बैठी थीं।

बताया जाता है कि दोनों साल 1986 की फिल्म 'कलक का टीका' के दौरान मिले थे। इसके बाद दोनों ने साल 1986 में ही शादी रचा ली थी। गौरतलब है कि जरीना और आदित्य की उम्र में 7 साल का अंतर है। एक्ट्रेस अपने पति से 7 साल बड़ी हैं। हालांकि दोनों के रिश्ते पर उम्र का कोई असर नहीं पड़ा।

ये है इंटरनेट पर रिलीज होने वाली पहली इंडियन फिल्म, 8 करोड़ बजट, कमाई हुई थी 30 करोड़

मुंबई। हमारे देश में हर साल हजारों फिल्में बनती हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि इंटरनेट पर रिलीज होने वाली पहली इंडियन फिल्म कौन सी थी। इंटरनेट पर रिलीज हुई पहली इंडियन फिल्म करीब 18 साल पहले आई थी। आपको बता दें कि यह फिल्म थी 'विवाह'। ये फिल्म साल 2006 में रिलीज हुई थी और हिट साबित हुई थी। 'विवाह' थिएटर के साथ ही इंटरनेट पर भी रिलीज हुई थी। विवाह ये कारनामा करने वाली पहली इंडियन फिल्म थी।

शाहिद कपूर-अमृता राव ने निभाया था लीड रोल : फिल्म 'विवाह' साल 2006 में रिलीज हुई थी। फिल्म में अहम किरदारों में मशहूर एक्टर शाहिद कपूर और एक्ट्रेस अमृता राव नजर आई थीं। फिल्म में आलोक नाथ, अमृता प्रकाश, अनुपम खेर, समीर सोनी, लता सभरवाल और मनोज जोशी ने भी अहम रोल अदा किया था। इसका म्यूजिक दिवंगत म्यूजिक कंपोजर रवीन्द्र जैन ने दिया था। वहीं फिल्म का डायरेक्शन सूरज बड़जात्या ने किया था।



'विवाह' का बजट और बॉक्स ऑफिस कलेक्शन

सूरज बड़जात्या की इस फिल्म का बजट सिर्फ 8 करोड़ रुपये था। वहीं फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 30 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। फिल्म की रिलीज से पहले कहा गया था कि 'विवाह' फ्लॉप हो जाएगा। हालांकि इसकी कहानी और किरदारों ने दर्शकों का दिल जीत लिया था। विवाह टिकट खिड़की पर हिट रही थी।

असल जिंदगी में किससे हुआ शाहिद और अमृता का विवाह

विवाह में शाहिद कपूर और अमृता राव पति-पत्नी के रोल में नजर आए थे। दोनों की प्रेम कहानी ने फिल्म में जान डाल दी थी लेकिन क्या आपको पता है कि असल जिंदगी में शाहिद कपूर और अमृता राव का विवाह किससे हुआ है? शाहिद ने मीरा राजपूत से साल 2015 में शादी की थी। वहीं अमृता ने साल 2016 में आरजे अनमोल से ब्याह रचाया था।

बॉलीवुड की करीब 200 फिल्मों में रंजीत ने किया काम

बॉलीवुड का सबसे खूंखार विलेन, न कमी नॉनवेज खाया, न कमी शराब पी

मुंबई। हिंदी सिनेमा के इतिहास में एक से बढ़कर एक विलेन हुए हैं। रुपहले पर्दे पर विलेन का जलवा सबसे ज्यादा 70 और 80 के दशक में देखने को मिला है। उस दौर में अनरीषा पुरी, प्रेम चोपड़ा, शक्ति कपूर, डैनी डेगजोवा, अमजद खान और प्राण साहब जैसे कई बेहतरीन विलेन हुए। उसी दौर के खूंखार खलनायक रंजीत भी रहे। एक्टर रंजीत किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। बॉलीवुड की करीब 200 फिल्मों में उन्होंने काम किया है। उन्होंने कई फिल्मों में रेप सीन किए। हालांकि असल जिंदगी में वे बेहद शर्मिले हैं। एक इंटरव्यू में एक्टर ने खुद से और बॉलीवुड सेल्स से जुड़े बड़े खुलासे किए थे।

ना कमी शराब पी ना नॉनवेज खाया

विलेन रंजीत कई फिल्मों में शराबी बनकर भी नजर आए लेकिन उन्होंने अपनी लाइफ में कभी शराब का टेस्ट तक नहीं लिया न ही वे नॉनवेज खाते हैं। हालांकि एक दौर में एक्टर के घर पर बॉलीवुड की बड़ी-बड़ी एक्ट्रेस और बड़े-बड़े एक्टरों पार्टी करते थे। सेलेब्स ड्रिक्स भी लेते थे और नॉनवेज भी खाते थे, मगर वे न खाते थे और न ही पीते थे।

परवीन बाबी बनाती थीं ड्रिक्स, काका पी जाते थे पूरी बोटल

कुछ महीनों पहले रंजीत ने अपने घर पर होने वाली स्टार्स की पार्टी का खुलासा किया था। उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया था कि, 'मेरे पेरेंट्स दिल्ली में रहते थे और मैं जूहू में रहता था। हर कोई रोज शाम मेरे घर आ जाता था, क्योंकि मेरे घर में कोई फॉर्मलिटि या पाबंदी नहीं थी। परवीन बाबी घर आकर ड्रिक्स बनाती थीं। राजेश खन्ना जैसे लोग एक रात में एक से दो बोटल शराब पी जाते थे।



कौन-सी हीरोइन क्या बनाती थीं

रीना रॉय मेरे घर आकर पराठे बनाती थीं, मौसमी चटनी मछली पकाती थीं। नीतू सिंह भिंडी बनातीं। घर का माहौल बहुत अच्छा होता था। वहीं मेल गेस्ट में सुनील दत्त, राजकुमार, संजय खान, फिरोज खान, धर्मद्र, शत्रुघ्न सिन्हा मौजूद रहते थे।

आखिरी बार 'हाउसफुल 4' में नजर आए थे रंजीत

82 साल के दिग्गज एक्टर रंजीत ने अपने करियर में एक से बढ़कर एक फिल्मों में 'शराबी', 'सुहाग', 'लैला मजनू', 'रॉकी', 'धरम-वीर', 'प्रेम प्रतिज्ञा', 'धर्मात्मा', 'नमक हलाल' और कैदी सहित कई फिल्मों में शामिल हैं। बता दें कि एक्टर को आखिरी बार अक्षय कुमार की सुपरहिट फिल्म 'हाउसफुल 4' में देखा गया था।

जोकोविच की निगाह रिकॉर्ड 25वें ग्रैंड स्लैम खिताब पर, आज से शुरू हो रहा अमेरिकी ओपन

एजेसी न्यूयॉर्क।



पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने के बाद उत्साह से भरे नोवाक जोकोविच सोमवार से यहां शुरू होने वाले अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में रिकॉर्ड 25वां ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने के लिए कोर्ट पर उतरेंगे। जोकोविच ने पेरिस में पुरुष एकल में स्वर्ण पदक जीता। उनके नाम पर 24 ग्रैंड स्लैम सहित कुल 99 खिताब दर्ज हैं और वह यहां अपने खिताबों का शतक पूरा करने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा सबसे अधिक सप्ताह तक विश्व का नंबर एक खिलाड़ी बने रहने का रिकॉर्ड भी जोकोविच के नाम पर है।

अभी टेनिस बाकी

'लोग मुझसे पूछते हैं कि अब तो आपने स्वर्ण पदक भी जीत लिया है तो फिर अब हासिल करने के लिए क्या बचा है लेकिन मेरे अंदर अब भी प्रतिस्पर्धा करने की भावना है। मैं आगे भी इतिहास बनाना चाहता हूँ और अपने करियर के इस दौर का पूरा आनंद लेना चाहता हूँ।'

- नोवाक जोकोविच

फेडरर के रिकॉर्ड पर नजर

अमेरिकी ओपन में रोजर फेडरर के बाद कोई भी खिलाड़ी लगातार टूर्नामेंट नहीं जीत पाया है और अब जोकोविच के पास यह मौका है। फेडरर ने 2004 से लेकर 2008 तक लगातार पांच खिताब जीते थे। जोकोविच को इस बार दूसरी वरीयता दी गई है।

अल्बोट से होगा पहले दौर में सामना



सर्बिया के इस 37 वर्षीय खिलाड़ी का अमेरिकी ओपन के पहले दौर में सामना मोल्देववा के 138वीं रैंकिंग वाले राडू अल्बोट से होगा। जोकोविच को खेले के 21 वर्षीय कालोस अल्फारेज से कड़ी चुनौती मिलने की संभावना है, लेकिन वह अमेरिकी ओपन में अपना पांचवा खिताब जीतने के लिए प्रतिबद्ध है।

रिकॉर्ड ब्रेक करने पर नजर

माग्नट कोर्ट के 24 ग्रैंड स्लैम रिकॉर्ड को पीछे छोड़ने और ऑल-टाइम ग्रैंड स्लैम रिकॉर्ड का एकमात्र स्वामिन्य का दावा करने के अपने प्रयास की तैयारी के लिए, जोकोविच ने मॉन्ट्रियल और सिनसिनाटी में यूएस ओपन ट्यून-अप टूर्नामेंट को छोड़ने का फैसला किया है, ताकि खुद को रिवॉर्ज करने और पेशेवर मीडोज में आगामी चुनौती पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिल सके।

नोस्कोवा ने जीता पहला डब्ल्यूटीए टूर खिताब



मॉन्टेरी। छठी वरीयता प्राप्त लिंडा नोस्कोवा ने लुलु सन को 7-6 (6) 6-4 से हराकर मॉन्टेरी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के रूप में अपना पहला डब्ल्यूटीए टूर खिताब जीता। इस तरह से नोस्कोवा ने पिछले हफ्ते सिनसिनाटी ओपन के पहले दौर में सन से चौथे सेटों में मिली हार का बदला ले लिया। चैक गणराज्य की यह 19 वर्षीय खिलाड़ी जनवरी में ऑस्ट्रेलियाई ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। उन्होंने यहां खिताब जीतकर सोमवार से शुरू होने वाले अमेरिकी ओपन के लिए अपनी पुष्पा तैयारी का सबूत भी पेश किया। अमेरिकी ओपन में उनका पहला मुकाबला मंगलवार को 30वीं वरीयता प्राप्त यूलिया पुतिनत्सेवा से होगा। इससे पहले चीन की हन्ग्युओ और रोमानिया की मोनिका निकुलैस्कु ने मैक्सिको की गिउलिआना ओल्मोस और रूस की एलेक्जेंड्रा पानोवा की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी को 3-6, 6-3, 10-4 से हराकर युवल खिताब जीता।

स्वर संक्षेप



फातिमा सना को मिली पाकिस्तान की कमान

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने 22 वर्षीय फातिमा सना को तीन से 20 अक्टूबर तक संयुक्त अरब अमीरात में होने वाले आगामी आईसीसी महिला टी20 विश्व कप के लिए निदा डार की जगह कप्तान नियुक्त किया है। निदा (37 वर्ष) अभी खराब फॉर्म से गुजर रही हैं। चयनकर्ताओं ने हालांकि निदा को टीम में बरकरार रखा है। टीम : फातिमा सना (कप्तान), आलिया रियाज, डायना बेग, गुल फिरोजा, इरम जावेद, मुनीबा अली (विकेटकीपर), नशरा सुंधु, निदा डार, आमाइमा सोहेल, सदफ शमास, सादिया इकबाल (फिट होने पर), सिदरा अमीन, सईदा अरुब शाह, तस्मिया रुबाब और तुबा हसन रिजर्व: नजीहा अल्वी (विकेटकीपर)।

किंग्स ने दिल्ली लायंस को 10 विकेट से हराया

गेंदबाजों के अनुशासित प्रयास के बाद ध्रुव कौशिक के नाबाद अर्धशतक की मदद से सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने यहां दिल्ली प्रीमियर लीग में वेस्ट दिल्ली लायंस को 10 विकेट से हरा दिया। सेंट्रल दिल्ली किंग्स के सामने 124 रन का मामूली लक्ष्य था जो उसने सुलामी बल्लेबाज ध्रुव (52 गेंदों में नाबाद 68 रन) और लक्ष्य धरेंजा (37 गेंदों में नाबाद 46 रन) के शानदार प्रदर्शन से 14.5 ओवर में हासिल कर दिया। इससे पहले वेस्ट दिल्ली लायंस ने निर्धारित 20 ओवर में आठ विकेट पर 123 रन बनाए।

शुभंकर डच गोल्फ में संयुक्त 11वें स्थान पर

आरहस। भारत के शुभंकर शर्मा ने अपने तीसरे राउंड में दो इंगल लगाए, लेकिन इसके साथ ही एक डबल बोगी भी की, जिससे वह डेनिश गोल्फ चैंपियनशिप में तीसरे दिन दो अंडर 69 का कार्ड खेल कर संयुक्त रूप से 11वें स्थान पर हैं। शुभंकर ने पहले दो राउंड में भी 69 का स्कोर किया था और तीसरे दौर के बाद उनका कुल स्कोर छह अंडर है। वह शीर्ष पर चल रहे लुकास बेजरेगार्ड से छह स्ट्रोक पीछे हैं। भारतीय स्टार ने इंगल के साथ शुरूआत की और उसके बाद बर्डी लगाईं।

ऑस्ट्रेलिया ए ने भारत ए को 45 रन से हराया

गोल्ड कोस्ट। टेस फिलॉटॉफ (तीन विकेट) और चार्ली नॉट (तीन विकेट) की धारदार गेंदबाजी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ए ने रविवार को यहां अनधिकृत महिला ट्वेंट क्रिकेट मैच में भारत ए को 45 रन से हरा दिया। भारतीय टीम 289 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 243 रन पर आउट हो गई। भारतीय टीम ने सुबह छह विकेट पर 149 रन से आगे खेलना शुरू किया लेकिन उसके बाकी बचे बल्लेबाज खेल के चौथे दिन 94 रन ही जोड़ पाए। ऑस्ट्रेलिया की टीम ने पहली पारी में 212 और दूसरी पारी में 260 रन बनाए।

टेस्ट

बांग्लादेश ने पाकिस्तान को 10 विकेट से हराया

एजेसी रावलपिंडी

रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए पहले टेस्ट मैच में बांग्लादेश ने पाकिस्तान को 10 विकेट से हराया। इसके साथ ही बांग्लादेश क्रिकेट टीम ने इतिहास रच दिया। बांग्लादेश ने पहली बार पाकिस्तान को टेस्ट क्रिकेट में हराया है। इससे पहले दोनों टीमों के बीच 13 टेस्ट मैच खेले गए थे। पाकिस्तान ने 12 में जीत दर्ज की थी और 1 मुकाबला ड्रॉ रहा था। पारी घोषित करने के बाद बांग्लादेश से हारने वाली पाकिस्तान पहली टीम बनी है। पाकिस्तान घर पर पिछले 9 टेस्ट में नहीं जीता है। इनमें 4 मुकाबले ड्रॉ भी रहे हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने पाकिस्तान को घर पर टेस्ट सीरीज में हराया था। साथ ही न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज ड्रॉ रही थी। मुकाबले की बात करें तो बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। पाकिस्तान ने पहली पारी 448-6 पर घोषित कर दी। जवाब में बांग्लादेश की पहली पारी 565 रन पर सिमट गई। पाकिस्तान टीम दूसरी पारी में 146 रन पर ढेर हो गई। ऐसे में बांग्लादेश को दूसरी पारी में जीत के लिए 30 रन का टारगेट मिला। बांग्लादेश टीम ने इस टारगेट को आसानी से चेज कर लिया।

घर पर पिछले 9 टेस्ट नहीं जीती पाकिस्तान टीम

पाकिस्तान को मुकाबले ड्रॉ भी रहे हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने पाकिस्तान को घर पर टेस्ट सीरीज में हराया था। साथ ही न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज ड्रॉ रही थी। मुकाबले की बात करें तो बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। पाकिस्तान ने पहली पारी 448-6 पर घोषित कर दी। जवाब में बांग्लादेश की पहली पारी 565 रन पर सिमट गई। पाकिस्तान टीम दूसरी पारी में 146 रन पर ढेर हो गई। ऐसे में बांग्लादेश को दूसरी पारी में जीत के लिए 30 रन का टारगेट मिला। बांग्लादेश टीम ने इस टारगेट को आसानी से चेज कर लिया।

पाकिस्तान की घर में शर्मनाक हार बांग्लादेश ने पहली बार दी शिकस्त



रहीम ने टोका शतक

पाकिस्तान की पहली पारी में सऊद शकील ने 261 गेंदों पर 141 रन और विकेटकीपर मोहम्मद रिजवान ने 239 गेंदों पर नाबाद 171 रन की पारी खेली। जवाब में बांग्लादेश की ओर से मुश्फिकुर रहीम ने अहम पारी खेली। वह दोहरे शतक से चूक गए। उन्होंने 341 गेंदों पर 191 रन बनाए। अपनी इस पारी में अनुभवी बल्लेबाज ने 22 चौके और 1 छक्का लगाए। उनके अलावा शाहदान इस्लाम ने 93, लिटन दास ने 56, मेहदी हसन मिराज ने 77 रन बनाए।

बाढ़ पीड़ितों को दान की पुरस्कार राशि

पाकिस्तान को पहले टेस्ट में 10 विकेट से हारने वाले मुश्फिकुर रहीम ने अपनी 191 रनों की शानदार पारी के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता। उन्होंने अपनी हजामी राशि बाढ़ प्रभावित बांग्लादेश के लोगों को दान करने का फैसला किया। मुश्फिकुर रहीम ने प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिलने के समय होने वाले इंटरव्यू में ही पुरस्कार राशि दान करने का फैसला किया। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच बनने पर 3 लाख पाकिस्तानी रुपए प्रदान मनी के रूप में मिला। बांग्लादेशी करंसी के हिसाब से इसकी वैल्यू करीब 1 लाख 29 हजार रुपये होगी। रहीम ने कहा, 'मैं एक घोषणा करना चाहता हूँ मैं अपनी पुरस्कार राशि बांग्लादेश में बाढ़ से जूझ रहे लोगों को दान करना चाहता हूँ।'

बैडमिंटन

तन्वी ने जीता एशियाई अंडर-15 का खिताब



एजेसी नई दिल्ली

भारतीय खिलाड़ी तन्वी पत्री ने चीन के चेंगदू में रविवार को खेले गए फाइनल में वियतनाम की थि थू ह्युयेन गुयेन को सीधे गेम में हराकर बैडमिंटन एशिया अंडर-17 एवं अंडर-15 जूनियर चैंपियनशिप में अंडर-15 वर्ग में लड़कियों का एकल खिताब जीता। शीर्ष वरीयता प्राप्त 13 वर्षीय तन्वी ने 34 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में अपनी दूसरी वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वी पर 22-20, 21-11 से जीत हासिल की। तन्वी इस जीत से सामिया इमाद फारुकी और तस्नीम मीर की सूची में शामिल हो गईं, जिन्होंने क्रमशः 2017 और 2019 में अंडर-15 लड़कियों का एकल खिताब जीता था। तन्वी ने पूरे टूर्नामेंट में अपना दबदबा बनाए रखा और उन्होंने जो पांच मैच खेले उनमें एक भी गेम नहीं हारा।

सिंधू जैसी प्रतिभाशाली हैं तन्वी : विमल

ओडिशा की रहने वाली तेरह वर्षीय तन्वी पत्री को लेकर पीपीबीएफ के निदेशक विमल कुमार ने कहा, वह लगभग आठ या नौ साल की थीं जब वह चीन से भारत आईं और 2022 में अकादमी से जुड़ीं। वह मुझे सिंधू की याद दिलाती हैं जब वह जूनियर वर्ग में खेला करती थीं। कम उम्र में मैच जीतने की क्षमता अच्छा संकेत है। उसे अभी लंबा सफर तय करना है लेकिन जिस तरह से वह खेलती हैं उसे देखते हुए उसमें काफी संभावनाएं हैं। वह अपने आयु वर्ग के खिलाड़ियों से काफी आगे हैं। पिछले छह महीनों में उसने अंडर-17 टूर्नामेंट जीते हैं और कई सैनियर खिलाड़ियों को हराया है, जिसमें वर्तमान राष्ट्रीय चैंपियनशिप फाइनलिस्ट तन्वी शर्मा भी शामिल हैं।

भाई-बहन की जोड़ी ने कराटे में फिर लहराया परचम

गोपाल

राजधानी के सेंट थॉमस स्कूल में आयोजित इंटर स्कूल कराटे चैंपियनशिप में सेज इंटरनेशनल स्कूल के विश्व दुबे व नैमिशो दुबे ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड व सिल्वर मेडल जीतकर अपने स्कूल का नाम रोशन किया। विश्व दुबे ने गोल्ड और नैमिशो दुबे ने सिल्वर मेडल जीता। यह प्रतियोगिता थॉमसाइट कराटे एकेडमी द्वारा आयोजित की गई थी। विश्व दुबे और नैमिशो दुबे के कोच शिवा सोनी ने हर्ष व्यक्त करते बताया कि दोनों बच्चों ने कड़ी मेहनत से इसकी तैयारी की थी। नैमिशो 14 साल की कैटेगरी में ब्राउन बेल्ट के साथ खेलती हैं और विश्व दुबे 8 साल की कैटेगरी में ब्लू बेल्ट के साथ खेलती हैं। गौरतलब है कि इन दोनों भाई बहन की जोड़ी कई बार यह कारनामा कर चुकी है। इसके साथ ही दोनों के नाम कई मेडल्स है जो उन्होंने देश व प्रदेश के लिए जीते हैं।

स्वर्ण पदक पर जमाया कब्जा

फाइनल के पहले गेम में तन्वी एक समय 11-17 से पीछे चल रही थीं लेकिन इसके बाद वियतनाम की खिलाड़ी ने कई गलतियां की जिसका फायदा उठाकर भारतीय खिलाड़ी पहला गेम अपने नाम पर कर ले सफल रही। तन्वी ने दूसरे गेम में अपनी प्रतिद्वंद्वी को कोई मौका नहीं दिया और मैच जीत कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस तरह से भारत ने इस प्रतियोगिता में एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। ह्यान वू टीटी ने शनिवार को अंडर-17 वर्ग में लड़कों का एकल स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था।

आईईएस स्कूल के छात्रों ने ताइक्वांडो में जीते 3 गोल्ड

आईईएस पब्लिक स्कूल द्वारा सभी स्कूल के छात्रों के लिए एसजीएफआई डिस्ट्रिक्ट लेवल ताइक्वांडो बॉयज एवं गर्ल्स चैंपियनशिप का आयोजन आईईएस कैम्पस में किया जा रहा है, जिसमें आईईएस पब्लिक स्कूल सहित शहर के कई प्रतिष्ठित स्कूल के 200 से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया। आईईएस पब्लिक स्कूल द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता को बॉयज एवं गर्ल्स दोनों वर्गों में प्रतियोगिता के दूसरे दिन अंडर 14 एवं अंडर 17 एवं अंडर 19 ग्रुप के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और अपने जौहर दिखाए। पुरस्कार वितरण समारोह का शुभारंभ डीएस ध्रुवें जिला खेल अधिकारी, भोपाल, राजीव यादव ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ इंडिया के सदस्य एवं मनीषा कवाथेकर, ग्रुप डायरेक्टर आईईएस पब्लिक स्कूल, भोपाल ने किया। उन्होंने सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी। साथ ही दोनों ही वर्ग एवं सभी एज ग्रुप में जीतने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः गोल्ड एवं सिल्वर मेडल के साथ सर्टिफिकेट प्रदान किए जाएंगे।

बीडीसीए के फिर अध्यक्ष चुने गए पूर्व विधायक ध्रुव नारायण

गोपाल

राजधानी मोटल शिराज में भोपाल संभाग क्रिकेट संघ (बीडीसीए) की जरनल बॉडी की मीटिंग आयोजित की गई। मीटिंग के प्रारंभ में सभी सदस्यों का स्वागत किया गया। इसके बाद सचिव द्वारा भोपाल संभाग क्रिकेट संघ की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। स्वागत उद्गार व्यक्त करते हुए ध्रुव नारायण सिंह ने सभी सदस्यों का सहयोग देने के लिए धन्यवाद दिया और विगत वर्षों में किए गए कार्यों की जानकारी दी और भोपाल संभाग क्रिकेट संघ के विरिष्ठ सदस्यों बीएस कुशवाह, जेएस पुरी, शफिक कुरेशी 'इंजीनियर', आरके दीक्षित व एमके भारद्वाज का शाल श्रौफल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आज इस मीटिंग में पर्यवेक्षक के रूप में मंग्र क्रिकेट संघ के सचिव संजीव राव ने पूरी कार्यवाही अपने सामने संचालित कराई। मीटिंग में चुनाव संचालक संजय जोशी द्वारा चुनाव की प्रक्रिया पूरी की गई। संघ के सभी सदस्यों ने ध्वनिमत से ध्रुव नारायण सिंह को पुनः अध्यक्ष पद पर चुनने के साथ ही उनकी ताजपोशी की गई, साथ ही उन्हें अधिकृत किया गया कि बाकी संघ के पदाधिकारियों को वे अपने विवेक से चुनें।

एसजीएफआई डिस्ट्रिक्ट लेवल ताइक्वांडो बॉयज एवं गर्ल्स चैंपियनशिप

गोपाल

राजधानी मोटल शिराज में भोपाल संभाग क्रिकेट संघ (बीडीसीए) की जरनल बॉडी की मीटिंग आयोजित की गई। मीटिंग के प्रारंभ में सभी सदस्यों का स्वागत किया गया। इसके बाद सचिव द्वारा भोपाल संभाग क्रिकेट संघ की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। स्वागत उद्गार व्यक्त करते हुए ध्रुव नारायण सिंह ने सभी सदस्यों का सहयोग देने के लिए धन्यवाद दिया और विगत वर्षों में किए गए कार्यों की जानकारी दी और भोपाल संभाग क्रिकेट संघ के विरिष्ठ सदस्यों बीएस कुशवाह, जेएस पुरी, शफिक कुरेशी 'इंजीनियर', आरके दीक्षित व एमके भारद्वाज का शाल श्रौफल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आज इस मीटिंग में पर्यवेक्षक के रूप में मंग्र क्रिकेट संघ के सचिव संजीव राव ने पूरी कार्यवाही अपने सामने संचालित कराई। मीटिंग में चुनाव संचालक संजय जोशी द्वारा चुनाव की प्रक्रिया पूरी की गई। संघ के सभी सदस्यों ने ध्वनिमत से ध्रुव नारायण सिंह को पुनः अध्यक्ष पद पर चुनने के साथ ही उनकी ताजपोशी की गई, साथ ही उन्हें अधिकृत किया गया कि बाकी संघ के पदाधिकारियों को वे अपने विवेक से चुनें।

इन्हें मिले पदक

प्रतियोगिता में दूसरे दिन अंडर 14 गर्ल्स - शिवानी खुरवार (अंडर 32 किग्रा) गोल्ड, मंतशा-सिल्वर। निधि वर्मा (अंडर 35 किग्रा) गोल्ड, वैसी दांगी-सिल्वर। तन्वी पाठक (अंडर 38 किग्रा) - गोल्ड, गीत साहू-सिल्वर। सोना - माही पवार - (38 किग्रा से अधिक) गोल्ड, शिवम सेन - सिल्वर। प्रतियोगिता में द्वितीय दिवस में अंडर 14 बॉयज - रयार्थ कनोजिया (21 किग्रा) - गोल्ड, आर्षाण नाडिर - सिल्वर। विदित साहू (29 किग्रा) - गोल्ड, मोक्ष सतपुत्र - सिल्वर। ध्वज श्रीवास्तव (35 किग्रा) गोल्ड, आरव सिंह - सिल्वर। अनुभव अहिरवार (38 किग्रा) - गोल्ड, आईईएस पब्लिक स्कूल, युवराज गुप्ता - सिल्वर। कार्तिक (25 किग्रा) - गोल्ड, पंकज दांगी - सिल्वर। आयुष - (27 किग्रा) गोल्ड, अर्शान नाडिर - सिल्वर। विदित साहू (29 किग्रा) - गोल्ड, मोक्ष सतपुत्र - सिल्वर। ध्वज श्रीवास्तव (35 किग्रा) गोल्ड, आरव सिंह - सिल्वर। अनुभव अहिरवार (38 किग्रा) - गोल्ड, आईईएस पब्लिक स्कूल, भावेश झारिया - सिल्वर। कार्तिक मिश्रा (41 किग्रा) गोल्ड - आईईएस पब्लिक स्कूल, आशु सिल्वर। अभिनव शुक्ला (41 किग्रा से अधिक) - गोल्ड, दक्ष शर्मा - सिल्वर।

‘मित्र शक्ति’ का 10वां संस्करण
12 अगस्त से शुरू हुआ था

एजेसी ►► कोलंबो

भारत और श्रीलंका की सेनाओं के बीच वार्षिक द्विपक्षीय अभ्यास ‘मित्र शक्ति’ का 10वां संस्करण संपन्न हो गया है। इस अभ्यास का उद्देश्य अंतर-संचालन क्षमता और आपसी समझ को बढ़ाना था। भारतीय उच्चायोग ने शनिवार को यह जानकारी दी। ‘मित्र शक्ति’ का 10वां संस्करण 12 अगस्त को श्रीलंका के मद्रु ओया स्थित सेना प्रशिक्षण स्कूल में शुरू हुआ था। उच्चायोग ने कहा कि इस अभ्यास का उद्देश्य सशस्त्र बलों के बीच अंतर-संचालन और आपसी समझ को बढ़ाना था तथा पेशेवर सम्मान, व्यक्तिगत संबंध और व्यापक प्रशिक्षण संपर्क के आधार पर घनिष्ठ रक्षा संबंधों को और प्रगाढ़ बनाना था।



आतंकवाद से निपटने एवं दक्षता बढ़ाने में मिलेगी मदद

भारत और श्रीलंका के बीच ‘मित्र शक्ति’ से रक्षा संबंध और गहरे

इस अभ्यास का उद्देश्य सशस्त्र बलों के बीच अंतर-संचालन और आपसी समझ को बढ़ाना है तथा घनिष्ठ रक्षा संबंधों को और गहरा करने का अवसर प्रदान करना है

सैन्य अभ्यास सुरक्षा और विकास के लिए आयोजित किया गया

‘मित्र शक्ति’ के पिछले संस्करणों की सफलता के आधार पर, इस अभ्यास को हाल ही में संयुक्त हथियार अवधारणा से उन्नत कर द्वि-सेवा स्तर की भागीदारी में बदल दिया गया, जो आतंकवाद और अन्य आम खतरों से प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए रक्षा सहयोग बढ़ाने की दोनों देशों की इच्छा को दर्शाता है। उच्चायोग ने कहा कि यह सैन्य अभ्यास भारत की ‘पड़ोसी पहल’ नीति और ‘क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर)’ के दृष्टिकोण के अनुरूप आयोजित किया गया।

राजनाथ सिंह ने अमेरिका में नौसेना के सतही युद्धक केंद्र का दौरा किया

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अमेरिका यात्रा के दौरान टेनेसी के मेम्फिस में नौसेना के सतही युद्धक केंद्र (एनएसडब्ल्यूसी) में विलियम बी मॉर्गन लार्ज कैवेटिशन चैनल (एलसीसी) का दौरा किया। यह दुनिया की सबसे बृहद एवं तकनीकी रूप से सर्वाधिक उन्नत जल सुरंग सुविधाओं में से एक है। यहां पर पनडुब्बियों, टारपीडो और नौसेना के सतही जहाजों तथा प्रोपेलर्स का परीक्षण किया जाता है। रक्षा मंत्री को इस केंद्र के बारे में जानकारी देकर सुरंग के वास्तविक प्रयोग के बारे में अवगत कराया गया। इस अवसर पर राजनाथ सिंह के साथ अमेरिका में भारत के भारतीय नौसेना के महानिदेशक, नौसेना संचालन कर्मी और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन से रक्षा प्रौद्योगिकी परामर्शदाता सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। अमेरिकी नौसेना के नीति उप-अवर सचिव ने उनका स्वागत किया और सतही युद्धक केंद्र के कमांडर तथा तकनीकी निदेशक ने तमाम उपयोगी जानकारी उनके साथ साझा की। इस महत्वपूर्ण चर्चा का उद्देश्य भारत में स्वदेशी डिजाइन और विकास के उद्देश्य से इसी प्रकार की सुविधाओं की शुरुआत के लिए चर्चा चल रहे प्रस्ताव की दिशा में सहयोग करना भी है।



खबर संक्षेप

पाक में दो बस हादसों में 36 यात्रियों की मौत



इस्लामाबाद। पाकिस्तान में रविवार को दो अलग-अलग बस हादसों में 36 लोगों की मौत हो गई। वहीं दोनों हादसों में 36 लोग घायल भी हुए हैं। कहुटा से रावलपिंडी जा रही बस, ब्रेक फेल होने के कारण खाई में गिर गई। इस बस में 26 यात्री सवार थे, जिनमें से 25 की मौत हो गई है एक घायल है। वहीं दूसरा हादसा बलूचिस्तान के मकरान राजमार्ग पर बुजी टॉप के पास हुआ। यहां ओवर स्प्रीडिंग की वजह से एक बस पलट गई। इस हादसे में 11 यात्रियों की मौत हो गई और 35 घायल हुए हैं।

श्रीलंकाई ने 11 भारतीय मछुआरों को पकड़ा



कोलंबो। श्रीलंका की नौसेना ने भारत के 11 मछुआरों को फिर गिरफ्तार कर लिया। नौसेना की अधिकारिक रिलीज के मुताबिक, इन लोगों को मछली पकड़ने के लिए समुद्री सीमा पार करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। श्रीलंका अब तक 333 भारतीयों को समुद्री सीमा पार कर मछली पकड़ने के आरोप में गिरफ्तार कर चुका है। इन मछुआरों के ट्रॉलर को श्रीलंका के उत्तरी प्रांत में जापान के करीब पॉइंट ऑफ पेद्रो के करीब मछली पकड़ने के दौरान गिरफ्तार किया गया।

ताबड़तोड़ हमलों के बीच पीएम नेतन्याहू बोले- हमें छेड़ा तो बख्शेंगे नहीं हिजबुल्लाह ने 320 मिसाइल दागे, इजराइल ने 100 जेट तैनात किए, मिसाइलों को आकाश में ढेर किया

एजेसी ►► यरुशलम

लेबनान में मौजूद आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह और इजराइल दोनों ने एक दूसरे के खिलाफ बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान की घोषणा कर दी है। घोषणा के चंद समय बाद ही दोनों तरफ से ताबड़तोड़ हमले किए जा रहे हैं। हिजबुल्लाह ने 320 मिसाइल दागे, जिसमें एक इजराइली सैनिक की मौत हो गई। इजराइल ने हिजबुल्लाह पर 100 जेट विमानों से मिसाइलों को आकाश में ढेर किया। इजराइल ने कहा कि उसने ईरान समर्थित हिजबुल्लाह के खिलाफ हमले की घोषणा के कुछ ही घंटों बाद आतंकवादी समूह के रॉकेट लांचरों पर हमले करके उन्हें मार गिराया।

इजराइल की सेना ने कहा कि उसने ईरान समर्थित हिजबुल्लाह के खिलाफ हमले की घोषणा के कुछ ही घंटों बाद आतंकवादी समूह के रॉकेट लांचरों पर हमले करके उन्हें मार गिराया। इजराइली सेना ने ये हमले दक्षिणी लेबनान में हिजबुल्लाह के ठिकानों पर किए हैं। वहीं हिजबुल्लाह ने कहा है कि उसने प्रमुख इजराइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाकर कई विस्फोटक ड्रोन से हमले किए हैं।



जंग को रोकने के लिए बैठक जारी

इजराइल ने 100 फाइटर जेट्स से जवाबी हमला किया

हिजबुल्लाह के हमले के बाद इजराइल ने लेबनान में उसके ठिकाने पर जवाबी कार्रवाई की है। जानकारी के मुताबिक इजराइली डिफेंस फोर्स ने 100 फाइटर जेट्स से हिजबुल्लाह की रॉकेट लॉन्चिंग साइट्स पर अटैक किया। लेबनान और इजराइल के बीच हमले उस वक्त हुए हैं जब गाजा में जारी जंग को रोकने के लिए मिश्र की राजधानी काहिरा में बैठक चल रही है। हिजबुल्लाह ने सुबह-सुबह इजराइल पर हमला किया। इस दौरान अमेरिका में रात थी। राष्ट्रपति जो बाइडेन हालांती पर नजर बनाए रखे हुए हैं। उन्होंने नेशनल सिक्योरिटी टीम के साथ मीटिंग की है। वहीं, व्हाइट हाउस ने बयान जारी कर कहा है कि अमेरिका, इजराइल को सुरक्षित रखने में उसकी मदद करता रहेगा।

मिडिल ईस्ट में तनाव बढ़ा

इजराइल में 48 घंटे के लिए इमरजेंसी

हिजबुल्लाह के हमले से इजराइल में अलर्ट है। हमले के बाद इजराइल में 48 घंटे के लिए इमरजेंसी घोषित कर दी गई है। इजराइली रक्षा मंत्री योव गैलेंट ने इसकी घोषणा की। इस हमले के बाद पीएम नेतन्याहू ने सुरक्षा कैबिनेट की बैठक में कहा कि हमें छेड़ा तो बख्शेंगे नहीं। दरअसल, ईरान में हमास के नेता इस्माइल हानिया और हिजबुल्लाह कमांडर फवाद शुकर की मौत के बाद से ही ईरान और हिजबुल्लाह ने इजराइल से बदला लेने की कसम खाई है। हिजबुल्लाह और इजराइल की इस जंग ने मिडिल ईस्ट में तनाव बढ़ा दिया है।

हिजबुल्लाह ने कहा 320 से अधिक कत्थूषा रॉकेट दागे

इजराइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया

वहीं, ईरान समर्थित हिजबुल्लाह ने एक बयान जारी करके कहा है कि उसने प्रमुख इजराइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाकर कई विस्फोटक ड्रोन से हमले किए हैं। हिजबुल्लाह ने कहा कि उसने इजराइल पर 320 से अधिक कत्थूषा रॉकेट दागे हैं।

लेबनान के कई इलाकों में बमबारी

इजराइली सेना ने एक बयान में कहा, पिछले एक घंटे में इजराइली सेना ने खतरों को दूर करने के लिए दक्षिणी लेबनान के कई इलाकों में हिजबुल्लाह पर हमले किए।

पीएम मोदी को पाक में एससीओ की बैठक में आने का दिया न्योता

15-16 अक्टूबर को इस्लामाबाद में होगी बैठक



एजेसी ►► नई दिल्ली

पाकिस्तान ने शंघाई को-ऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एससीओ) के कार्डिसल ऑफ हेड्स ऑफ गवर्नमेंट सोएचजी समिट के लिए पीएम मोदी को इस्लामाबाद आने का न्योता दिया है। पाकिस्तान 15-16 अक्टूबर के बीच एससीओ की मीटिंग होस्ट करेगा। भारत के अलावा संगठन के दूसरे सदस्य देशों के हेड ऑफ गवर्नमेंट को भी न्योता दिया गया है। हालांकि, इस बात की उम्मीद बेहद कम है कि पीएम मोदी इस बैठक के लिए इस्लामाबाद जाएंगे। हालांकि, वे किसी मंत्री को बतौर प्रतिनिधि बैठक में शामिल होने के लिए भेज सकते हैं। पिछले साल किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक ने एससीओ की सोएचजी बैठक होस्ट की थी। इसमें भारत की तरफ से विदेश मंत्री एस जयशंकर शामिल हुए थे।

जुलाई में एससीओ समिट में शामिल नहीं हुए थे मोदी

वहीं इस साल 3-4 जुलाई को कजाकिस्तान में हुए एससीओ समिट में भी पीएम मोदी शामिल नहीं हुए थे। उनकी जगह विदेश मंत्री जयशंकर ने ही भारत का प्रतिनिधित्व किया था। दरअसल, एससीओ समिट के समय ही भारत में नई सरकार बनने के बाद संसद का पहला सत्र हुआ था, जिस वजह से पीएम मोदी कजाकिस्तान नहीं जा पाए थे।

जन्माष्टमी उत्सव



बैंगलुरु। रविवार को बैंगलुरु में भगवान श्रीकृष्ण के रूप में सजे बच्चे जन्माष्टमी उत्सव समारोह में भाग लेते हुए।

ब्राजील के विदेश मंत्री भारत पहुंचे द्विपक्षीय संबंधों को दोगे मजबूती

नई दिल्ली। ब्राजील के विदेश मंत्री मारो विएरा चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर भारत पहुंचे। यात्रा के दौरान वह भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के तरीकों पर विचार-विमर्श करेंगे। इसके साथ ही वह रियो डी जेनेरियो में होने वाले आगामी जी-20 शिखर सम्मेलन से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा करेंगे। विदेश मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय के अनुसार विदेश मंत्री एस जयशंकर और विएरा 27 अगस्त को नौवाँ भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे। बैठक में दोनों पक्ष समग्र रणनीतिक साझेदारी का विस्तार करने पर विचार-विमर्श करेंगे। ब्राजील के जी-20 प्रेसीडेंसी के तहत जी-20 तिकड़ी (ट्रोइका) में भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं। वार्षिक जी-20 शिखर सम्मेलन 18-19 नवंबर को ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरियो में होने वाला है।

विस चुनाव: गांदरबल सीट से चुनाव लड़ेंगे उमर अब्दुल्ला

एजेसी ►► श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला गांदरबल विधानसभा सीट से चुनाव लड़ेंगे। यह घोषणा लोकसभा सदस्य सैयद रुहुल्लाह मेहेदी और एनसी के प्रांतीय अध्यक्ष नासिर असलम वानी ने रविवार को उमर अब्दुल्ला और एनसी के वरिष्ठ नेता और अ न त ना ग - रा जौ री निर्वाचन क्षेत्र से सांसद मियां अलताफ अहमद की उपस्थिति में की।



तीन बार सांसद बन चुके हैं उमर अब्दुल्ला

उमर अब्दुल्ला 2009 से 2015 तक जम्मू-कश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं। वह तीन बार लोकसभा सांसद बने हैं। उन्होंने 2008-2014 तक गांदरबल सीट का प्रतिनिधित्व किया है। वहीं, 2014-2019 तक बीरवाह विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया है।

कांग्रेस और नेशनल काँग्रेस के साथ गठबंधन करेगी महबूबा

पीडीपी (पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि वह जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस-नेशनल काँग्रेस गठबंधन को पूरी तरह समर्थन देने के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए उन्होंने शर्त रखी है कि गठबंधन को पीडीपी के एजेंडे को मानना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर ऐसा होता है, तो वह विधानसभा चुनाव में गठबंधन के लिए सभी सीटें छोड़ देंगी। महबूबा ने भाजपा के साथ गठबंधन की संभावना को भी खारिज कर दिया, जिसके साथ पीडीपी ने पहले गठबंधन सरकार चलाई थी। नेशनल काँग्रेस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन की घोषणा की है।

नासा ने सुनीता और विलमोर को स्पेस स्टेशन पर रोकने का किया फैसला अब फरवरी 2025 में होगी दोनों अंतरिक्ष यात्रियों की वापसी

एजेसी ►► वॉशिंगटन

नासा ने शनिवार को फैसला किया कि वह अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बुच विलमोर को फरवरी 2025 तक अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर ही रखेगा। अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को वापस धरती पर लाना बहुत जोखिम भरा है। उन्हें स्पेसएक्स के साथ धरती पर वापस आने के लिए अगले साल तक इंतजार करना होगा। बता दें कि सुनीता और विलमोर जून से ही अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर फंसे हुए हैं। स्टारलाइनर के श्रस्त्र में खराबी और हीलियम रिसाव के कारण अंतरिक्ष स्टेशन से उनकी वापस आने की यात्रा बाधित हो गई है। नासा का कहना है कि उनके



इंजीनियर स्टारलाइनर की गड़बड़ी को ठीक करने में लगे हुए हैं लेकिन अभी तक यह तय नहीं हो पाया है कि कि वे कब तक इसे ठीक कर पाएंगे। नासा के शीर्ष अधिकारियों ने बताया कि बैरी बुच विलमोर और सुनीता विलियम्स फरवरी में स्पेसएक्स अंतरिक्ष यान में वापस आएंगे। उनका स्टारलाइनर कैस्पल एक या दो सप्ताह में अनडॉक (खाली) कर दिया जाएगा और ऑटोपिलॉट पर वापस लौटने का प्रयास करेगा।

बोइंग की साख पर सवाल

इस घटना की वजह से बोइंग कंपनी की साख को एक बड़ा झटका लगा है। कंपनी के हवाई जहाज के मामले में सुरक्षा संबंधी चिंताएं और बढ़ गई हैं। बोइंग ने कई सालों की मेहनत के बाद अंतरिक्ष यान स्टारलाइनर को तैयार किया था। सभी धरस्तर परीक्षणों के आधार पर स्टारलाइनर सुरक्षित है, लेकिन उसके दावे गलत साबित हुए।

स्पेसएक्स के कू-9 ड्रैगन कैस्पल से होगी वापस

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) से सुनीता विलियम्स और बैरी विलमोर की वापसी को लेकर चल रही रस्साकशी के बीच नासा ने स्पष्ट कर दिया है कि दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को स्पेसएक्स के कू-9 ड्रैगन कैस्पल से वापस पृथ्वी पर लाया जाएगा। गौरतलब है कि सुनीता विलियम्स और बैरी विलमोर शुरुआत में आठ दिनों के लिए एक मिशन पर बोइंग के स्टारलाइनर स्पेसक्राफ्ट से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की यात्रा पर गए थे। हालांकि, वहां पहुंचकर बोइंग के स्पेसक्राफ्ट में कुछ तकनीकी खामियां मिलीं, जिसके बाद उनकी पृथ्वी पर वापसी टल गई। वह 78 दिनों से भी अधिक समय से स्पेस स्टेशन में हैं। अब नासा ने स्पेसएक्स के कू ड्रैगन का उपयोग कर अगले साल फरवरी में उनकी वापसी निश्चित की है। यह कू ड्रैगन अगले महीने लॉन्च होने वाला है।

हमारे पास अंतरिक्ष यान नहीं: इसरो

भारतीय स्पेस एजेंसी इसरो भी उनकी वापसी का मिशन पूरा कर सकती थीं। इसे लेकर हाल ही में एक पॉइंटकॉस्ट में इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ से सवाल किया गया था, जिसके जवाब में उन्होंने कहा कि फिलहाल इसरो के पास इस तरह के मिशन को अंजाम देने की क्षमता नहीं है। एस सोमनाथ ने कहा कि अभी हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे पास कोई अंतरिक्ष यान नहीं है, जो वहां जाकर उन्हें बचा सके। यह संभव नहीं है।

बांग्लादेश में पटरी पर लौट रही जिंदगी

बांग्लादेश में शेख हसीना के शासन के खिलाफ शुरू हुई हिंसा अब भले ही थम गई है, लेकिन तनाव बना हुआ है। हालांकि, हालातों को धीरे-धीरे सामान्य करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। एक महीने से बंद पड़ चुकी मेट्रो की सेवा को रविवार को फिर से शुरू कर दिया गया है। आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार, मीरपुर 10 और काजीपापा स्टेशन हालांकि बंद रहेंगे। ढाका मेट्रो की सेवा के बहाल होने से यात्रियों, विशेष रूप से छात्रों और कार्यालय जाने वालों ने राहत की सांस ली क्योंकि उन्हें अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए रोजाना यातायात भीड़ से गुजरना पड़ता था। बताया जा रहा है कि मेट्रो सेवा रविवार को सुबह करीब सात बजे बहाल हुई। जुलाई में सरकार विरोधी प्रदर्शनों के दौरान मीरपुर-10 और काजीपापा स्टेशनों पर तोड़फोड़ की गई थी।



स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक राजेश मीणा द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी एल टॉवर, 3-ए, विद्याआश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं बी-66, कुसुम विहार, जगतपुरा, मालवीया नगर, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक-राजेश मीणा, Email : sanjeevnitoday@gmail.com मो: 8094811115, (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)